पाठ 17 : वीर कुँवर सिंह

शब्दार्थ :

1.व्यापक - बड़े पैमाने पर

2.बगावत - विद्रोह

3.कूच करना - आगे चलना

4.ओजस्वी - वीरता भरे

5.रियासत - हुकूमत का क्षेत्र

प्रश्नों के उत्तर :

प्रश्न 1. वीर कुँवरसिंह के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया है ?

उत्तर: वीर कुँवरसिंह के व्यक्तित्व की निम्न विशेषताएँ हैं -

साहस - कुँवरसिंह का पूरा जीवन साहसपूर्ण घटनाओं से भरा पड़ा है। अपनी घायल भुजा को स्वयं काटकर गंगा में समर्पित कर देना साहस का सबसे अद्‌वितीय उदाहरण है।

उदारता - कुँवरसिंह की आर्थिक हालत अच्छी न होने के बावजूद वे निर्धनों की हमेशा सहायता करते थे। इसी उदारता के फलस्वरूप उन्होंने कई तालाबों, कुँओं, स्कूलों तथा रास्तों का निर्माण किया।

स्वाभिमानी - कुँवरसिंह स्वाभिमानी व्यक्ति थे | वयोवृद्‌ध होने के बाद भी उन्होंने अंग्रेजों के आगे अपने घुटने नहीं टेके।

सांप्रदायिक सद्‌भाव - सांप्रदायिक सद्‌भाव में कुँवरसिंह की गहरी आस्था थी इसलिए इब्राहिम खाँ और किफायत हुसैन उनकी सेना में उच्च पद पर आसीन थे।

प्रश्न 2. कुँवरसिंह को बचपन में किन कामों में मजा आता था ? क्या उन्हें उन कामों से स्वतंत्रता सेनानी बनने में कुछ मदद मिली ?

उत्तर: कुँवरसिंह को बचपन में घुड़सवारी, तलवारबाजी और कुश्ती लड़ने में मजा आता था। इन्हीं कार्यों के कारण उनके अंदर साहस और वीरता का विकास हुआ, जिससे वे आगे जाकर अंग्रेजों से लोहा ले सके।

प्रश्न 3. सांप्रदायिक सद्‌भाव में कुँवर सिंह की गहरी आस्था थी - पाठ के आधार पर कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर:- सांप्रदायिक सद्‌भाव में कुँवरसिंह की गहरी आस्था थी इसलिए इब्राहिम खाँ और किफायत हुसैन उनकी सेना में धर्म के आधार पर नहीं अपितु कार्यकुशलता और वीरता के कारण उच्च पद पर आसीन थे। उनके यहाँ हिन्दुओं के और मुसलमानों के सभी त्योहार एक साथ मिलकर मनाए जाते थे। उन्होंने पाठशाला और मकतब भी बनवाए।

प्रश्न 4. आमतौर पर मेले मनोरंजन, खरीद फ़रोख्त एवं मेलजोल के लिए होते हैं। वीर कुँवरसिंह ने मेले का उपयोग किस रूप में किया?

उत्तर:- आमतौर पर मेले मनोरंजन, खरीद फ़रोख्त एवं मेलजोल के लिए होते हैं। वीर कुँवरसिंह ने मेले का उपयोग क्रांतिकारी गतिविधियों, गुप्त बैठकों की योजनाओं के रूप में किया।

प्रश्न 5. आरा किस प्रकार क्रांति का महत्वपूर्ण केंद्र बन गया ?

उत्तर: 25 जुलाई 1857 को दानापुर की सैनिक टुकड़ी ने विद्रोह कर दिया | सैनिक सोन नदी पार कर आरा की ओर चल पड़े | आरा पहुँचकर सैनिकों ने कुँवर सिंह का जयघोष करते हुए जेल की सलाखें तोड़ दी और कैदियों को आज़ाद कर दिया | 27 जुलाई 1857 को कुँवर सिंह ने आरा पर विजय प्राप्त कर ली और आरा क्रांति का महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया |

व्याकरण : प्रत्यय

परिभाषा -ऐसे शब्दांश जो शब्दों के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं |

प्रत्यय के दो भेद हैं :

1 - कृत प्रत्यय 2 - तद्धित प्रत्यय

क्रम	**प्रत्यय**	**निर्मित शब्द**
1.	आऊ	टिकाऊ, बिकाऊ
2.	एरा	लुटेरा, ममेरा
3.	ई	रेती, भारी
4.	आवट	सजावट, लिखावट
5.	कार	कलाकार, कहानीकार
6.	वाला	सब्जीवाला, फलवाला
7.	दार	दुकानदार, जमींदार
8.	ता	मानवता, दासता
9.	आपा	बुढ़ापा, मोटापा
10.	पन	लड़कपन, बचपन
11.	इन	धोबिन, मालिन

12.	नी	मोरनी, शेरनी
13.	इत	शोभित, चिंतित
14.	ईला	रंगीला, चमकीला
15.	वान	गुणवान, दयावान
16.	शाली	बलशाली, भाग्यशाली
17.	नाक	दर्दनाक, खौफनाक
18.	मंद	अक्लमंद, जरूरतमंद

अभ्यास कार्य: प्रश्न 1 और 3 को नोटबुक में करवाया जाएगा | एवं प्रश्न 2 और 4 को पाठ्य पुस्तक में ही करवाया जाएगा | (पृष्ठ सं. 84 ,85)

क्रियात्मक : औपचारिक पत्र

दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को अपने शहर में फैली गंदगी की जानकारी देते हुए पत्र लिखिए |

अभ्यास हेतु :

1. स्कूल बस की खराब स्थिति से अवगत करवाते हुए प्रधानाचार्य जी को पत्र लिखिए |
2. अपने बड़े भाई के विवाह में शामिल होने के लिए अवकाश हेतु प्रधानाचार्य को प्रार्थना - पत्र लिखिए |

व्याकरण :संवाद लेखन

1. भारत और पाकिस्तान के बीच हुए क्रिकेट मैच को लेकर दो मित्रों के बीच हुई बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए |

अभ्यास हेतु

2. बढ़ती महँगाई पर दो महिलाओं के बीच हुई बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए |

3. जीवन में खेलकूद का महत्त्व बताते हुए दो मित्रों के बीच हुई बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए |

क्रियात्मक : विज्ञापन लेखन

1. किसी भी अच्छी कंपनी के पेन का विज्ञापन तैयार कीजिए |

अभ्यास हेतु :

2. स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से किसी भी कीट नाशक साबुन का विज्ञापन तैयार कीजिए | (जैसे डेटोल और सेवलोन)
3. किसी भी नई कंपनी की साइकिल का विज्ञापन तैयार कीजिए |

बाल महाभारत (पाठ - 21 से 30)

प्रश्न 1: औरत के वेश में अर्जुन को देखकर दुर्योधन ने क्या सोचा ?

उत्तर : औरत के वेश में अर्जुन को देखकर दुर्योधन ने सोचा कि हमें इस बात से क्या मतलब कि औरत के वेश में कौन है? मान लीजिए कि यह अर्जुन ही है, फिर भी हमारा तो काम ही बनता है | शर्त के अनुसार उन्हें फिर से बारह वर्ष का वनवास भुगतना पड़ेगा |

प्रश्न 2: दुर्योधन ने भीष्म पितामह से संधि के संबंध में क्या कहा ?

उत्तर : संधि के संबंध में दुर्योधन ने कहा,"पूज्य पितामह ! मैं संधि नहीं चाहता हूँ | राज्य तो दूर रहा, मैं तो एक गाँव तक पांडवों को देने के लिए तैयार नहीं हूँ |"

प्रश्न 3: पांडवों ने जब अपना सही परिचय दिया तो राजा विराट की क्या प्रतिक्रिया हुई ?

उत्तर: पांडवों ने जब अपना सही परिचय राजा विराट को दिया तो उनके आश्चर्य और आनंद का ठिकाना न रहा | राजा का हृदय कृतज्ञता, आनंद और आश्चर्य से तरंगित हो उठा |

प्रश्न 4 : श्री कृष्ण ने अर्जुन और दुर्योधन की सहायता करने के बारे में क्या कहा ?

उत्तर: श्री कृष्ण ने अर्जुन और दुर्योधन को बताया कि मेरी सेना एक तरफ होगी और दूसरी तरफ मैं अकेला रहूँगा | मेरी यह प्रतिज्ञा भी है कि मैं युद्ध में न तो हथियार उठाऊँगा और न ही लड़ूँगा | तुम भली-भांति सोचकर निर्णय करो कि इन दोनों में से तुम किसे चुनते हो |

प्रश्न5: श्री कृष्ण किस उददेश्य से हस्तिनापुर गए थे ?

उत्तर : श्री कृष्ण कौरवों और पांडवों में संधि कराने के उददेश्य से हस्तिनापुर गए थे | वे यह भी सुनिश्चित करना चाहते थे कि भविष्य में उन पर कोई यह आरोप न लगाए कि युद्ध रोकने का जो प्रयास उन्हें करना चाहिए था वह उन्होंने नहीं किया |

प्रश्न6: कर्ण ने माता कुंती को क्या वचन दिया ?

उत्तर : कर्ण ने माता कुंती को वचन देते हुए कहा कि युद्ध में अर्जुन को छोड़कर किसी पांडव के प्राण नहीं लूँगा | या तो अर्जुन मारा जाएगा या मैं मारा जाऊँगा | तुम्हारे पांच पुत्र हर हाल में जीवित रहेंगे |

प्रश्न7: युद्ध-क्षेत्र में अर्जुन के भ्रम को दूर करने के लिए श्री कृष्ण ने क्या किया ?

उत्तर: युद्ध-क्षेत्र में अर्जुन के भ्रम को दूर करने के लिए श्री कृष्ण ने कर्मयोग का उपदेश दिया |

प्रश्न8: पहले दिन के युद्ध में पांडवों की क्या स्थिति रही ?

उत्तर: पहले दिन के युद्ध में भीष्म ने पांडवों पर ऐसा हमला किया कि पांडव - सेना थर्रा उठी | युधिष्ठिर के मन में भय छा गया और घबराहट के मारे वे श्री कृष्ण के पास गए | श्री कृष्ण उन्हें धीरज बँधाने लगे |

पाठ 18 : संघर्ष के कारण मैं तुनुकमिजाज हो गया : धनराज

शब्दार्थ :

1.साक्षात्कार - मुलाकात
2.कष्टसाध्य - कष्ट देनेवाला
3.विस्मय - आश्चर्य, हैरानी
4.शोहरत - यश, प्रसिद्धि

प्रश्नोतर :

प्रश्न 1. साक्षात्कार पढ़कर आपके मन में धनराज पिल्लै की कैसी छवि उभरती है ? वर्णन कीजिए।

उत्तर:- साक्षात्कार पढ़कर मन में धनराज पिल्लै की ऐसी छवि उभरती है जो सीधे-सरल, भावुक, स्पष्ट वक्ता, परिवार से जुड़े और स्वाभिमानी हैं परन्तु कठिन संघर्षों के और आर्थिक संकटों के कारण अपने आपको असुरक्षित समझने लगे थे। प्रसिद्धि प्राप्त करने पर भी उनमें जरा भी अभिमान नहीं है। लोगों को लगता है कि उनके स्वभाव में तुनक-मिजाजी आ गई परन्तु आज भी वे सरल व्यक्ति हीं हैं |

प्रश्न2. धनराज पिल्लै ने ज़मीन से उठकर आसमान का सितारा बनने तक की यात्रा तय की है। संक्षिप्त में वर्णन कीजिए।

उत्तर:- धनराज पिल्लै की ज़मीन से उठकर आसमान का सितारा बनने तक की यात्रा कठिनाइयों और संघर्षों से भरी थी। धनराज पिल्लै एक साधारण परिवार के होने के कारण उनके लिए हॉकी में आना इतना आसान न था। उनके पास हॉकी खरीदने तक के पैसे नहीं थे। उन्हें हॉकी खेलने के लिए अपने मित्रों से हॉकी स्टिक उधार माँगनी पड़ती थी। लेकिन धनराज पिल्लै ने हार न मानी | पुरानी स्टिक से ही निष्ठा और लगन से अभ्यास करते रहे और विश्व स्तरीय खिलाड़ी बनकर दिखाया। ऑलविन एशिया कैंप में चुने जाने के बाद धनराज पिल्लै ने मुड़कर कभी पीछे नहीं देखा अर्थात् उसके बाद वे लगातार सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते गए।

प्रश्न3. 'मेरी माँ ने मुझे अपनी प्रसिद्धि को विनम्रता से सँभालने की सीख दी है' -धनराज पिल्लै की इस बात का क्या अर्थ है ?

उत्तर:-'मेरी माँ ने मुझे अपनी प्रसिद्धि को विनम्रता से सँभालने की सीख दी है' धनराज पिल्लै की इस बात का अर्थ यह है कि उनकी माँ ने हमेशा उन्हें प्रसिद्ध होने के बाद भी घमंड की भावना मन में न आने की सलाह दी। इंसान चाहे जितना ऊँचा उठ जाए परन्तु उसमें घमंड की भावना नहीं होनी चाहिए।

प्रश्न4. किन विशेषताओं के कारण हॉकी को भारत का राष्ट्रीय खेल माना जाता है ?

उत्तर:- हॉकी का खेल भारत में अत्यंत लोकप्रिय है। यह खेल भारत के प्रत्येक प्रदेश में खेला जाता है। इस खेल ने भारत को विश्व-पटल पर काफी प्रसिद्धि दिलवाई है। हॉकी के खेल में भारत देश ने सन् 1928 से 1956 तक, लगातार छः स्वर्ण-पदक जीते हैं। इन्हीं विशेषताओं के कारण हॉकी को भारत का राष्ट्रीय खेल माना जाता है |

प्रश्न 5. धनराज ने कब महसूस किया कि वे एक मशहूर चेहरा बन चुके हैं ?

उत्तर:- एक बार किसी फोटोग्राफर ने भीड़ से भरे रेलवे स्टेशन पर धनराज को देखा और अगले दिन खबर छाप दी कि हॉकी का सितारा अभी भी मुंबई की लोकल ट्रेनों में सफ़र करता है तब धनराज ने महसूस किया कि वे एक मशहूर चेहरा बन चुके हैं |

व्याकरण : विलोम शब्द

व्याकरण पाठ्यपुस्तक से 41 से 60 विलोम शब्द नोटबुक में लिखवाए जाएँगे | (पेज नं.51,52)

क्रियात्मक : औपचारिक पत्र

नगरपालिका अधिकारी को पत्र के द्वारा सड़कों की ख़राब स्थिति के संबंध में सूचित कीजिए|

अभ्यास हेतु :

(i) स्थानान्तरण प्रमाण--पत्र हेतु प्रधानाचार्य जी को प्रार्थना पत्र लिखिए |

(ii) खेल महाकुम्भ में भाग लेने की अनुमति लेने हेतु जिला खेल अधिकारी को पत्र लिखिए |

क्रियात्मक : अपठित काव्यांश

नवयुग की नूतन वीणा में ---------- पुनः नया निर्माण करो || (व्याकरण निपुण पृष्ठ सं. 270)

व्याकरण : मुहावरे

व्याकरण निपुण पाठ्यपुस्तक से 11 से 20 मुहावरे नोटबुक में लिखवाए जाएँगे | (पेज नं.220)

व्याकरण : अनेकार्थक शब्द

व्याकरण निपुण पाठ्यपुस्तक से निम्नलिखित अनेकार्थक शब्द लिखवाए जाएँगे |

1 अर्थ - धन, मतलब, कारण, प्रयोजन |
2 कर - हाथ, किरण, टैक्स |
3 कल - मशीन, बीता दिन, आने वाला दिन, चैन |
4 जड़ - मूर्ख, अचेतन, मूल |
5 दल - पत्ता, सेना, झुंड, पार्टी |
6 द्विज - दांत, चंद्रमा, ब्राह्मण, पक्षी |
7 पत्र - चिट्ठी, पत्ता, पंख |
8 भाग - हिस्सा, भाग्य, बँटवारा |
9 मत - राय, नहीं, विचार |
10 मधु - शहद, वसंत, रस, शराब |
11 मित्र - सूर्य, दोस्त, वरुण देवता |
12 रंग - वर्ण, रंगत, शोभा, मौज़ |
13 वर - श्रेष्ठ, दूल्हा, वरदान |
14 विधि - ढंग, रीति, नियम,भाग्य |
15 हरि - विष्णु, बन्दर, सिंह, सर्प |

व्याकरण : वाक्यांश के लिए एक शब्द

व्याकरण पुस्तक निपुण से निम्नलिखित वाक्यांश नोटबुक में लिखवाए जाएंगे |
(1, 2 , 7 ,13 ,15 , 17 , 18 ,25 , 26 ,31 , 38 , 39 , 43 ,44 , 45) (पृष्ठ सं . 61- 62)

क्रियात्मक : अनुच्छेद लेखन

(i) **खेल और हमारा स्वास्थ्य** :

संकेत बिंदु - भूमिका, खेलों का महत्त्व, जीवन कौशल की शिक्षा, स्वास्थ्य के लिए खेल, समापन |

अभ्यास हेतु :

(ii) विज्ञान : वरदान या अभिशाप :

संकेत बिंदु - भूमिका, जीवन में परिश्रम की आवश्यकता, उन्नति का आधार, परिश्रम का प्रभाव, समापन |

(iii) समय का सदुपयोग :

संकेत बिंदु - भूमिका, जीवन में समय का महत्त्व, समय की उपयोगिता, हमारा कर्तव्य, समापन |

पाठ 19 आश्रम का अनुमानित व्यय (लेखक: मोहनदास करमचंद गांधी)

(पाठ का वाचन तथा स्पष्टीकरण)

शब्दार्थ :

अनुमानित - अंदाजा लगाया हुआ

मासिक - महीने का

बोझ - भार

इंतजाम - व्यवस्था ,प्रबंध

प्रश्न 1: गाँधी जी पेशेवर कारीगरों के उपयोग में आनेवाले औज़ार – छेनी, हथौड़े, बसूले क्यों खरीदना चाहते थे ?

उत्तर : गाँधी जी के मन में आश्रम के प्रत्येक व्यक्ति को स्वावलंबी बनाने की बात रही होगी क्योंकि जिन औज़ारों का ज़िक्र किया गया है, वे बढ़ई के कार्य अर्थात् लकड़ी का सामान बनाने के काम में आते है। गाँधी जी अहमदाबाद में एक आश्रम खोलने का प्रयास कर रहे थे। वे चाहते थे कि आश्रम में सारा काम आश्रम के लोग स्वयं ही करें। इसके लिए वह औज़ारों की एक सूची तैयार कर रहे थे। ताकि आश्रम में रहकर ही उसकी ज़रूरतों का सामान स्वयं बनाया जा सकता है |

प्रश्न 2: पाठ पढ़ने के बाद आश्रम के उद्देश्यों और कार्यप्रणाली के बारे में क्या-क्या अनुमान लगाए जा सकते हैं ?

उत्तर: आश्रम की कार्यप्रणाली के बारे में यह अनुमान लगाए जा सकते हैं -

(i) गाँधी जी आश्रम के प्रत्येक व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे।

(ii) आश्रम से गाँधी जी अपने आंदोलनों की भूमिका तैयार करना चाहते थे ।

(iii) इन उद्देश्यों के लिए जरूरी वस्तुएं तथा जमींन की आवयश्कता थी ।

(iv) वह आश्रम में प्रत्येक व्यक्ति को श्रम के लिए प्रेरित करना चाहते थे।

(v) वह इस आश्रम को भी स्वावलम्बी बनाना चाहते थे |

प्रश्न 3: गांधीजी के अनुसार आश्रम में कौन-कौन से खर्चे थे तथा वे उसे कहाँ से जुटाना चाहते थे ?

उत्तर : गांधीजी चाहते थे कि आश्रम का खर्च अहमदाबाद उठाए , परन्तु वे इसके लिए किसी को विवश नहीं करना चाहते थे | उन्होंने यह भी कहा था कि अन्य खर्च यदि अहमदाबाद उठा ले तो वह खाने का खर्च स्वयं जुटा लेंगे | उनके अनुसार आश्रम में निम्नलिखित खर्च थे |

- मकान और खेत की जमीन का किराया |
- अलमारियों का खर्च |
- बढई तथा मोची के औजार |
- एक बैलगाड़ी या घोड़ागाड़ी |
- भोजन का खर्च 6000 रुपया |

प्रश्न 4 गांधीजी को आश्रम के लिए कितने स्थान की जरुरत थी और क्यों ?

उत्तर : गांधी जी को आश्रम के लिए तीन रसोईघर, पचास हजार वर्ग फुट क्षेत्रफल में बने मकान तथा खेती के लिए पाँच एकड़ जमीन की जरूरत थी |

पाठ-20 विप्लव गायन (लेखक - बालकृष्ण शर्मा 'नवीन')

(काव्य-पठन तथा स्पष्टीकरण)

शब्दार्थ :

कालकूट - विष

मिजराबें - वीणा बजाते समय अँगुलियों में पहनते हैं |

अन्तरतर - हृदय की गहराई

हिलोर - लहर

प्रश्न 1: नीचे दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

'सावधान! मेरी वीणा में.....दोनों मेरी ऐंठी हैं।'

उत्तर : इन पंक्तियों का यह अर्थ है कि कवि जब वीणा से क्रांति के स्वर निकालने का प्रयास करता है तब चिनगारियाँ उत्पन्न होती हैं, मिजराबें टूट जाती हैं तथा कवि की अंगुलियाँ ऐंठ जाती हैं | इसमें यह भाव छिपा है कि जब कोई भी व्यक्ति या समाज क्रांति की आवाज उठाने की शुरुआत करता है तो उसके दमन के प्रयास भी होने लगते हैं | ऐसी स्थिति में उस व्यक्ति या समाज को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है |

प्रश्न 2: वीणा से क्रांति - गीत के स्वर निकालते समय क्या होता है ?

उत्तर : वीणा से क्रांति-गीत के स्वर निकालते समय चिंगारियाँ उठने लगती हैं, मिजराबें टूट जाती हैं और कवि की दोनों अंगुलियाँ ऐंठने लगती हैं |

प्रश्न 3:कवि क्रांति क्यों लाना चाहता है ? अर्थ स्पष्ट करें ?

उत्तर : विप्लव गायन कविता के माध्यम से कवि मानव-जाति के विकास के रास्ते में उत्पन्न अवरोधों को दूर करने के लिए क्रांति लाना चाहता है, जिससे समाज में व्याप्त

जड़ता दूर हो जाए | कवि के अनुसार जीवन का रहस्य नवनिर्माण में है | तभी देश और समाज की प्रगति हो सकेगी और एक उन्मुक्त परिवेश का निर्माण होगा |

प्रश्न 4: कविता के मूलभाव को ध्यान में रखते हुए बताइए कि इसका शीर्षक विप्लव गायन क्यों रखा होगा ?

उत्तर : इस कविता का मूलभाव जड़ता, अन्धविश्वास, कुप्रथाओं, कुरीतिओं, पुरानी रुढियों के बंधन से मानव जाति को मुक्त कराना तथा नए समाज का निर्माण करना है | कवि क्रांति के माध्यम से परिवर्तन लाना चाहता है | इसलिए उसने क्रांति का आह्वान करती हुई इस कविता का नाम विप्लव गायन रखा है |

व्याकरण : विराम चिह्न

व्याकरण पुस्तक निपुण से सभी विराम चिह्न तथा उसके दो-दो वाक्य उदाहरण स्वरुप नोटबुक में लिखवाए जायेंगे | जैसे :-

पूर्णविराम चिह्न (|)

- पिता जी दफ़्तर जा रहे हैं |
- कमल पुस्तक पढ़ रहा है |

अल्पविराम चिह्न (,)

- राहुल, महेश, करण और विनोद पढ़ रहे थे |
- आम, केला, अमरुद तथा सेब ले आना |

अभ्यास कार्य में प्रश्न 1 का कार्य नोटबुक में तथा प्रश्न 2 का कार्य व्याकरण पाठ्य पुस्तक में करवाया जाएगा | (पृष्ठ सं. 212 , 213)

बाल महाभारत (पाठ - 31 से 40)

प्रश्न: 1 भीष्म जब घायल होकर युद्ध-क्षेत्र में पड़े थे तब उन्होंने कर्ण और पांडवों में मेल कराने का प्रयास किस प्रकार किया ?

उत्तर : कर्ण जब युद्ध-क्षेत्र में भीष्म से मिलने गया तब भीष्म ने कहा “बेटा तुम कुंती के पुत्र हो, सूर्य-पुत्र | तुम पांडवों में ज्येष्ठ हो, अत: तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम पांडवों से मित्रता कर लो | मेरी इच्छा है कि युद्ध में मेरे सेनापतित्व के साथ ही पांडवों के प्रति तुम्हारे वैर-भाव का भी आज ही अंत हो जाए |

प्रश्न 2 : बारहवें दिन के युद्ध में कोरवों ने क्या योजना बनाई ?

उत्तर : बारहवें दिन की योजना के तहत अर्जुन को युधिष्ठिर से दूर ले जाने का निर्णय किया गया | अत: अर्जुन को युद्ध के लिए ललकारा गया और युधिष्ठिर से दूर ले जाया गया | आचार्य द्रोण ने युधिष्ठिर को जीवित पकड़ने की बहुत कोशिश की किन्तु वे असफल रहे |

प्रश्न 3: अभिमन्यु ने चक्रव्यूह भेदने के संबंध में युधिष्ठिर को क्या बताया ?

उत्तर : चक्रव्यूह के संबंध में अभिमन्यु ने बताया कि इस चक्रव्यूह में प्रवेश करना तो उसे आता है पर प्रवेश करने के बाद कहीं कोई संकट आ गया तब व्यूह से बाहर निकलना उसे याद नहीं है |

प्रश्न :4 अभिमन्यु के मरने के बाद जयद्रथ के बारे में अर्जुन ने क्या प्रतिज्ञा की ?

उत्तर : अभिमन्यु के मरने के बाद अर्जुन ने दृढ़तापूर्वक यह प्रतिज्ञा की जिसके कारण मेरे प्रिय पुत्र की मृत्यु हुई है, उस जयद्रथ का मैं कल सूर्यास्त होने से पहले वध करके ही रहूँगा |

प्रश्न 5 : कर्ण के रथ का पहिया जमीन में धँस जाने के बाद वह अर्जुन को धर्म -युद्ध की कौन -सी बात बताने लगा ?

उत्तर : कर्ण के रथ का बायाँ पहिया जमीन में धँस जाने पर वह घबराकर अर्जुन से बोला , "अर्जुन ठहरो मेरे रथ का पहिया कीचड़ में फँस गया है | पांडु-पुत्र तुम्हे धर्म-युद्ध करने का जो यश प्राप्त हुआ है, उसे व्यर्थ न गँवाओ | मैं जमीन पर खड़ा हूँ और तुम रथ पर बैठकर मुझ पर बाण चलाओ ,यह उचित नहीं होगा |"

प्रश्न 6 : दुर्योधन का वध कैसे और किसने किया ?

उत्तर : दुर्योधन जल से बाहर निकलकर भीम के साथ गदा युद्ध करने लगा | श्री कृष्ण ने इशारों में ही बताया कि दुर्योधन की जाँघ पर गदा मारने पर ही वह जीत जाएगा भीम ने तुरंत दुर्योधन की जाँघ पर प्रहार किया जिसके कारण उसकी मृत्यु हो गई |

प्रश्न 7 महाभारत विजय के उपरांत धृतराष्ट्र के प्रति पांडवों की क्या मनोदशा रही ?

उत्तर : विजय प्राप्त करके पांडवों का संपूर्ण राज्य पर एकछत्र राज हो गया | युधिष्ठिर ने अपने भाइयों को आदेश दे दिया था कि धृतराष्ट्र की हर सुख - सुविधा का ध्यान रखा जाए ताकि उन्हें अपने पुत्रों का अभाव महसूस न हो | किन्तु भीम कभी -कभी गांधारी व् धृतराष्ट्र को अप्रिय वचन बोलकर उनके मन को ठेस पहुँचाया करता था |

प्रश्न 8 : श्रीकृष्ण ने अपना शरीर क्यों त्याग दिया ?

उत्तर : अपने कुल का नाश होता देख श्रीकृष्ण भी ध्यानमग्न हो गए | वे पेड़ के नीचे जमीन पर लेट गए तभी किसी शिकारी का बाण उनके तलवे को छेदता हुआ शरीर में घुस गया और वही उनके देहावसान का कारण बन गया |

प्रश्न 9 : पांडवों ने अपना अंतिम समय कहाँ बिताया ?

उत्तर : श्रीकृष्ण के देहावसान के समाचार से पांडवों के मन में भी जीवन के प्रति विराग छा गया | द्रोपदी सहित पाँचों पांडव तीर्थ -यात्रा करते हुए हिमालय की ओर चले गए तथा अंतिम समय वहीँ बिताया |

दिनांक : _____ विषय : हिन्दी कक्षा : VII

मास -नबम्बर

पाठ 14 : खान पान की बदलती तस्वीर (मौखिक पाठ)

पाठ का वाचन तथा स्पष्टीकरण

पाठ 15: नीलकंठ (लेखिका : महादेवी वर्मा)

(पाठ का वाचन तथा स्पष्टीकरण)

शब्दार्थ :

अनुसरण	-	नकल
आश्वस्त	-	संतुष्ट
कायाकल्प	-	सुधार होना, रूप बदलना
ग्रीवा	-	गर्दन
क्रूर	-	हिंसक, निर्दय

प्रश्नों के उत्तर :

प्रश्न 1: मोर-मोरनी के नाम किस आधार पर रखे गए ?

उत्तर : मोर की गर्दन नीली होने के कारण उसका नाम नीलकंठ रखा गया और छाया की तरह उसके साथ रहने के कारण मोरनी का नाम नाम राधा रखा गया ।

प्रश्न 2: जाली के बड़े घर में पहुँचने पर मोर के बच्चों का किस प्रकार स्वागत हुआ?

उत्तर : जाली के बड़े घर में पहुँचने पर मोर के बच्चों का ऐसा स्वागत हुआ जैसे घर में कोई नववधू का आगमन हुआ हो | लक्का कबूतर नाचना छोड़कर दोनों के आगे पीछे घूमकर गुटरगूँ करने लगा। बड़े खरगोश एक ही क्रम में शान्त भाव से बैठकर सभासदों की भांति निरीक्षण कर रहे थे तो खरगोश के बच्चों के लिए तो खेलकूद का कार्यक्रम ही चल पड़ा था । तोते भी एक आँख बंद कर चुपचाप उनको देखकर अपनी तरफ़ से निरीक्षण में लगे थे।

प्रश्न 3: लेखिका को नीलकंठ की कौन-कौन सी चेष्टाएँ बहुत भाती थीं?

उत्तर : लेखिका को नीलकंठ की अनेक चेष्टाएँ बहुत भाती थीं जैसे:- उसका गर्दन ऊँची कर देखना, विशेष भंगिमा के साथ गर्दन नीची कर दाना चुगना, पानी पीना, टेढ़ी कर शब्द सुनना आदि | इसके अतिरिक्त पंखों का सतरंगी छाता तानकर नृत्य करना भी लेखिका को बहुत अच्छा लगता था |

प्रश्न 4 : वसंत ऋतु में नीलकंठ के लिए जालीघर में बंद रहना असहनीय क्यों हो जाता था?

उत्तर : वसंत ऋतु के आरम्भ होते ही अपने स्वभाव के कारण नीलकंठ अस्थिर हो उठता था। वसंत में जब आम के वृक्ष मंजरियों से लद जाते थे, अशोक का वृक्ष नए लाल पत्तों से भर जाता, तो वह स्वयं को रोक नहीं पाता था । जालीघर में वह इतना अस्थिर हो उठता कि उसे बाहर छोड़ देना पड़ता |

प्रश्न 5 : जालीघर में रहनेवाले सभी जीव एक-दूसरे के मित्र बन गए थे, पर कुब्जा के साथ ऐसा संभव क्यों नहीं हो पाया?

उत्तर : जालीघर के सभी पशु-पक्षी मिलनसार स्वभाव के थे तथा उन में आपसी प्रेम था। परन्तु स्वभाव से ईर्ष्यालु कुब्जा को ये पंसद ना था। उसका मुख्य उद्देश्य सबको नीलकंठ से दूर रखना था। वह नहीं चाहती थी कि नीलकंठ के पास कोई भी आए। उसने सभी पशु-पक्षियों को अपनी चोंच से घायल कर दिया था। यहाँ तक की उसने राधा को घायल कर उसके अंडों को नष्ट कर दिया था । नीलकंठ भी उससे डर के मारे भागने लगा था।

प्रश्न 6: नीलकंठ ने खरगोश के बच्चे को साँप से किस तरह बचाया ?

उत्तर : साँप ने खरगोश का पिछला शरीर तो मुहँ में दबा रखा था | खरगोश से चीं-चीं का स्वर भी इतना तीव्र नहीं निकल रहा था कि किसी को सुनाई दे सके | तभी नीलकंठ ने उस मंद स्वर की व्यथा पहचानी और नीचे आ गया | उसने समझ लिया कि साँप के फन पर चोंच मारने से खरगोश भी घायल हो सकता है इसलिए उसने साँप को फन के पास पंजों से दबाया और फिर चोंच से इतने प्रहार किए कि वह अधमरा हो गया | पकड़ ढ़ीली पड़ते ही खरगोश का बच्चा मुख से बाहर निकल आया और बच गया |

व्याकरण : उपसर्ग

जो शब्दांश शब्दों से पूर्व जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं | हिंदी में चार प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग होता है :

❖ **(1) संस्कृत के उपसर्ग :**

अन्	-	अनादर, अनुपस्थित, अनादि
अति	-	अतिरिक्त, अत्याचार, अत्यंत
दुर्	-	दुर्गम, दुर्लभ, दुर्भाग्य, दुर्बल
प्र	-	प्रबल, प्रगति, प्रयोग, प्रयत्न
उप	-	उपकार, उपनाम, उपवास

(2) हिंदी के उपसर्ग :

नि - निडर, निकम्मा, निहत्था

भर - भरपूर, भरपेट, भरसक

अध - अधखिला, अधमरा, अधपका

कु - कुकर्म, कुसंगति, कुरूप

(3) उर्दू के उपसर्ग :

ना - नासमझ, नालायक, नापसंद

बद - बदनाम, बदतमीज, बदसूरत

हम - हमसफ़र, हमउम्र, हमदर्द

ला - लाइलाज, लावारिस, लापता

❖ **(4) उपसर्ग की तरह प्रयुक्त संस्कृत अव्यय :**

सत् - सत्कर्म, सत्कार, सज्जन

सह - सहयोग, सहपाठी, सहचर

स - सहर्ष, सकुशल, सचित्र

अभ्यास कार्य : अभ्यास कार्य में प्रश्न 2,3 व 4 का कार्य नोटबुक में करवाया जाएगा |

(पृष्ठ सं. 74)

व्याकरण : पर्यायवाची शब्द

(व्याकरण पुस्तक से 21 से 40 पर्यायवाची शब्द नोटबुक में लिखवाया जाएगा | (पेज नं. 48)

क्रियात्मक: चित्र वर्णन

(व्याकरण निपुण पाठ्यपुस्तक पेज नं. 200 का चित्र वर्णन करवाया जाएगा |)

व्याकरण :संवाद लेखन

1. भारत और पाकिस्तान के बीच हुए क्रिकेट मैच को लेकर दो मित्रों के बीच हुई बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए |

अभ्यास हेतु -

2. बढ़ती महंगाई पर दो महिलाओं के बीच हुई बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए |
3. जीवन में खेलकूद का महत्व बताते हुए दो मित्रों के बीच हुई बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए |

मास - दिसम्बर

16. भोर और बरखा (मीरा बाई)

शब्दार्थ :

1. भोर - सुबह
2. कोलाहल - शोर
3. किवारे - दरवाजे
4. भनक - आभास, अहसास
5. दामिन - बिजली

प्रश्नों के उत्तर :

प्रश्न 1 : 'बंसीवारे ललना', 'मोरे प्यारे', 'लाल जी', कहते हुए यशोदा किसे जगाने का प्रयास करती हैं और वे कौन-कौन सी बातें कहती हैं?

उत्तर: माता यशोदा 'बंसीवारे ललना', 'मोरे प्यारे', 'लाल जी', कहते हुए अपने पुत्र श्री कृष्ण को जगाने का प्रयास कर रही हैं। श्री कृष्ण को जगाने के लिए वे कहती हैं कि रात बीत चुकी है, सभी के दरवाजें खुल चुके हैं, देखो गोपियाँ दही बिलो कर तुम्हारा मनपसंद माखन निकाल रही है, द्वार पर देव और मानव सभी तुम्हारे दर्शन की प्रतीक्षा में खड़े हैं, तुम्हारे मित्रगण भी तुम्हारी जय-जयकार कर रहें हैं, सभी अपने हाथ में माखन रोटी लेकर गाएँ चराने के लिए तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहें हैं। अत: तुम जल्दी उठ जाओ।

प्रश्न 2 : ग्वाल-बालों के हाथ में क्या है ? और वे श्रीकृष्ण की प्रतीक्षा क्यों कर रहे हैं ?

उत्तर: ग्वाल-बालों ने हाथ में माखन रोटी ले ली है और वे सभी गाएँ चराने के लिए श्रीकृष्ण की प्रतीक्षा में खड़े हैं।

प्रश्न 3 : पढ़े हुए पद के आधार पर ब्रज की भोर का वर्णन कीजिए।

उत्तर: ब्रज में भोर होते ही सभी घरों के किवाड़ खुल जाते हैं। गोपियाँ दही बिलोने लगती हैं उनके कंगन खनकने से पूरे वातावरण में मधुर संगीत गूँजने लगता है। ग्वाल-बाल गौएँ चराने के लिए तैयार होने लगते हैं।

प्रश्न 4 : मीरा को सावन मनभावन क्यों लगने लगा?

उत्तर: मीरा को सावन मनभावन लगने लगा क्योंकि सावन के मौसम में मीरा को श्रीकृष्ण की भनक अर्थात् श्रीकृष्ण के आने का अहसास कराता है। साथ ही इस समय प्रकृति भी बड़ी सुहावनी होती है।

प्रश्न 5 : पाठ के आधार पर सावन की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: प्रस्तुत पद में सावन का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया गया है। सावन के महीने में मनभावन वर्षा हो रही है। बादल उमड़-घुमड़कर कर चारों दिशाओं में फैल जाते हैं। बिजली चमकने लगती है। वर्षा की झड़ी लग जाती है। वर्षा की नन्हीं-नन्हीं बूँदें गिरने लगती हैं| पवन भी शीतल और सुहावनी हो जाती है। सावन का महीना मीरा को श्रीकृष्ण की भनक अर्थात् श्रीकृष्ण के आने का अहसास कराता है।

प्रश्न 6 : सावन वर्षा ऋतु का महीना है, वर्षा ऋतु से संबंधित दो अन्य महीनों के नाम लिखिए।

उत्तर: वर्षा ऋतु से संबंधित दो अन्य महीनों के नाम-आषाढ़ और भादो हैं।

पाठ 17 : वीर कुँवर सिंह

शब्दार्थ :

1.व्यापक	-	बड़े पैमाने पर
2.बगावत	-	विद्रोह
3.कूच करना	-	आगे चलना
4.ओजस्वी	-	वीरता भरे
5.रियासत	-	हुकूमत का क्षेत्र

प्रश्नों के उत्तर :

प्रश्न 1. वीर कुँवरसिंह के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?

उत्तर: वीर कुँवरसिंह के व्यक्तित्व की निम्न विशेषताएँ हैं -

साहस - कुँवरसिंह का पूरा जीवन साहसपूर्ण घटनाओं से भरा पड़ा है । अपनी घायल भुजा को स्वयं काटकर गंगा में समर्पित कर देना साहस का सबसे अद्‌वितीय उदाहरण है ।

उदारता - कुँवरसिंह की आर्थिक हालत अच्छी न होने के बावजूद वे निर्धनों की हमेशा सहायता करते थे। इसी उदारता के फलस्वरूप उन्होंने कई तालाबों, कुँओं, स्कूलों तथा रास्तों का निर्माण किया ।

स्वाभिमानी - कुँवरसिंह स्वाभिमानी व्यक्ति थे | वयोवृद्‌ध होने के बाद भी उन्होंने अंग्रेजों के आगे अपने घुटने नहीं टेके।

सांप्रदायिक सद्‌भाव - सांप्रदायिक सद्‌भाव में कुँवरसिंह की गहरी आस्था थी इसलिए इब्राहिम खाँ और किफायत हुसैन उनकी सेना में उच्च पद पर आसीन थे ।

प्रश्न 2. कुँवरसिंह को बचपन में किन कामों में मजा आता था ? क्या उन्हें उन कामों से स्वतंत्रता सेनानी बनने में कुछ मदद मिली ?

उत्तर: कुँवरसिंह को बचपन में घुड़सवारी, तलवारबाजी और कुश्ती लड़ने में मजा आता था। इन्हीं कार्यों के कारण उनके अंदर साहस और वीरता का विकास हुआ, जिससे वे आगे जाकर अंग्रेजों से लोहा ले सके।

प्रश्न 3. सांप्रदायिक सद्भाव में कुँवर सिंह की गहरी आस्था थी- पाठ के आधार पर कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर:- सांप्रदायिक सद्भाव में कुँवरसिंह की गहरी आस्था थी इसलिए इब्राहिम खाँ और किफायत हुसैन उनकी सेना में धर्म के आधार पर नहीं अपितु कार्यकुशलता और वीरता के कारण उच्च पद पर आसीन थे। उनके यहाँ हिन्दुओं और मुसलमानों के सभी त्योहार एक साथ मिलकर मनाए जाते थे। उन्होंने पाठशाला और मकतब भी बनवाए।

प्रश्न 4. आमतौर पर मेले मनोरंजन, खरीद फ़रोख्त एवं मेलजोल के लिए होते हैं। वीर कुँवरसिंह ने मेले का उपयोग किस रूप में किया?

उत्तर:- आमतौर पर मेले मनोरंजन, खरीद फ़रोख्त एवं मेलजोल के लिए होते हैं। वीर कुँवरसिंह ने मेले का उपयोग क्रांतिकारी गतिविधियों, गुप्त बैठकों की योजनाओं के रूप में किया।

प्रश्न 5. आरा किस प्रकार क्रांति का महत्वपूर्ण केंद्र बन गया ?

उत्तर: 25 जुलाई,1857 को दानापुर की सैनिक टुकड़ी ने विद्रोह कर दिया | सैनिक सोन नदी पार कर आरा की ओर चल पड़े | आरा पहुँचकर सैनिकों ने कुँवर सिंह का जयघोष करते हुए जेल की सलाखें तोड़ दीं और कैदियों को आज़ाद कर दिया | 27 जुलाई,1857 को कुँवर सिंह ने आरा पर विजय प्राप्त कर ली और आरा क्रांति का महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया |

व्याकरण : प्रत्यय

परिभाषा -ऐसे शब्दांश जो शब्दों के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं|

प्रत्यय के दो भेद हैं :

1 - कृत प्रत्यय 2 - तद्धित प्रत्यय

क्रम	प्रत्यय	निर्मित शब्द
1.	आऊ	टिकाऊ, बिकाऊ

2.	एरा	लुटेरा, ममेरा
3.	ई	रेती, भारी
4.	आवट	सजावट, लिखावट
5.	कार	कलाकार, कहानीकार
6.	वाला	सब्जीवाला, फलवाला
7.	दार	दुकानदार, जमींदार
8.	ता	मानवता, दासता
9.	आपा	बुढ़ापा, मोटापा
10.	पन	लड़कपन, बचपन
11.	इन	धोबिन, मालिन
12.	नी	मोरनी, शेरनी
13.	इत	शोभित, चिंतित
14.	ईला	रंगीला, चमकीला
15.	वान	गुणवान, दयावान
16.	शाली	बलशाली, भाग्यशाली
17.	नाक	दर्दनाक, खौफनाक
18.	मंद	अक्लमंद, जरूरतमंद

अभ्यास कार्य: प्रश्न 1 और 3 को नोटबुक में करवाया जाएगा | एवं प्रश्न 2 और 4 को पाठ्य पुस्तक में ही करवाया जाएगा | (पृष्ठ सं. 84 ,85)

क्रियात्मक : औपचारिक पत्र

दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को अपने शहर में फैली गंदगी की जानकारी देते हुए पत्र लिखिए |

अभ्यास हेतु :

1. बस की खराब स्थिति से अवगत करवाते हुए प्रधानाचार्य जी को पत्र लिखिए |
2. अपने बड़े भाई के विवाह में शामिल होने के लिए अवकाश हेतु प्रधानाचार्य को प्रार्थना - पत्र लिखिए |

क्रियात्मक : विज्ञापन लेखन

1. किसी भी अच्छी कंपनी के पेन का विज्ञापन तैयार कीजिए |

अभ्यास हेतु :

2. स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से किसी भी कीट नाशक साबुन का विज्ञापन तैयार कीजिए | (जैसे डेटोल और सेवलोन)
3. किसी भी नई कंपनी की साइकिल का विज्ञापन तैयार कीजिए |

बाल महाभारत (पाठ - 21 से 30)

प्रश्न 1: औरत के वेश में अर्जुन को देखकर दुर्योधन ने क्या सोचा ?

उत्तर : औरत के वेश में अर्जुन को देखकर दुर्योधन ने सोचा कि हमें इस बात से क्या मतलब कि औरत के वेश में कौन है? मान लो की यह अर्जुन ही है, फिर भी हमारा तो काम ही बनता है | शर्त के अनुसार उन्हें फिर से बारह वर्ष का वनवास भुगतना पड़ेगा |

प्रश्न 2: दुर्योधन ने भीष्म पितामह से संधि के संबंध में क्या कहा ?

उत्तर : संधि के संबंध में दुर्योधन ने कहा,"पूज्य पितामह ! मैं संधि नहीं चाहता हूँ | राज्य तो दूर रहा, मैं तो एक गाँव तक पांडवों को देने को तैयार नहीं हूँ |"

प्रश्न 3: पांडवों ने जब अपना सही परिचय दिया तो राजा विराट की क्या प्रतिक्रिया हुई ?उत्तर: पांडवों ने जब अपना सही परिचय राजा विराट को दिया तो उनके आश्चर्य और आनंद का ठिकाना न रहा | राजा का हृदय कृतज्ञता, आनंद और आश्चर्य से तरंगित हो उठा |

प्रश्न 4 : श्री कृष्ण ने अर्जुन और दुर्योधन की सहायता करने के बारे में क्या कहा ?

उत्तर: श्री कृष्ण ने अर्जुन और दुर्योधन को बताया कि मेरी सेना एक तरफ होगी और दूसरी तरफ मैं अकेला रहूँगा | मेरी यह प्रतिज्ञा भी है कि मैं युद्ध में न तो हथियार उठाऊँगा और न ही लड़ूँगा | तुम भली-भांति सोचकर निर्णय करो कि इन दो में से तुम किसे लेते हो |

प्रश्न5: श्री कृष्ण किस उददेश्य से हस्तिनापुर गए थे ?

उत्तर : श्री कृष्ण कौरवों और पांडवों में संधि कराने के उददेश्य से हस्तिनापुर गए थे | वे यह भी सुनिश्चित करना चाहते थे कि भविष्य में उन पर कोई यह आरोप न लगाए कि युद्ध रोकने का जो प्रयास उन्हें करना चाहिए था वह उन्होंने नहीं किया |

प्रश्न6: कर्ण ने माता कुंती को क्या वचन दिया ?

उत्तर : कर्ण ने माता कुंती को वचन देते हुए कहा कि युद्ध में अर्जुन को छोड़कर किसी पांडव के प्राण नहीं लूँगा या तो अर्जुन मारा जाएगा या मैं मारा जाऊँगा | तुम्हारे पांच पुत्र हर हालत में रहेंगे |

प्रश्न7: युद्ध-क्षेत्र में अर्जुन के भ्रम को दूर करने के लिए श्री कृष्ण ने क्या किया ?

उत्तर: युद्ध-क्षेत्र में अर्जुन के भ्रम को दूर करने के लिए श्री कृष्ण ने कर्मयोग का उपदेश दिया |

प्रश्न8: पहले दिन के युद्ध में पांडवों की क्या स्थिति रही ?

उत्तर: पहले दिन की लड़ाई में भीष्म ने पांडवों पर ऐसा हमला किया कि पांडव सेना थर्रा उठी | युधिष्ठिर के मन में भय छा गया और घबराहट के मारे वे श्री कृष्ण के पास गए | श्री कृष्ण उन्हें धीरज बंधाने लगे |

पाठ 5 : मिठाईवाला (लेखक : भगवतीप्रसाद वाजपेयी)

शब्दार्थ :

मादक	-	मनमोहन
स्नेहाभिषिक्त	-	स्नेह से भरपूर
हिलोरें	-	लहरें
मृदुल स्वर	-	मीठा स्वर
अप्रतिभ	-	उदास

प्रश्नों के उत्तर :-

प्रश्न 1: मिठाईवाला अलग-अलग चीज़ें क्यों बेचता था और वह महीनों बाद क्यों आता था?

उत्तर : मिठाईवाले का मुख्य उद्देश्य बच्चों का सानिध्य प्राप्त करना था | बच्चे एक चीज़ से ऊब न जाएँ इसलिए मिठाईवाला अलग-अलग चीज़ें बेचता था। बच्चों में उत्सुकता बनाए रखने के लिए वह महीनों बाद आता था। साथ ही चीज़ें न मिलने से बच्चे रोएँ, ऐसा मिठाई वाला नहीं चाहता था।

प्रश्न 2: मिठाईवाले में वे कौन से गुण थे जिनकी वजहसे बच्चे तो बच्चे, बड़े भी उसकी ओर खिंचे चले आते थे

उत्तर: निम्नलिखित कारणों से बच्चे तथा बड़े मिठाईवाले की ओर खिंचे चले आते थे-

- मिठाई वाला मादक-मधुर ढंग से गाकर अपनी चीज़ों को बेचता था।
- वह कम लाभ में बच्चों को खिलौने तथा मिठाइयाँ देता था।
- उसके हृदय में बच्चों के लिए स्नेह था, वह कभी गुस्सा नहीं करता था।
- हर बार नई चीज़ें लाता था।
- पैसे न होने पर भी वह बच्चों को वस्तुएँ दे दिया करता था |

प्रश्न 3: विजय बाबू एक ग्राहक थे और मुरलीवाला एक विक्रेता। दोनों अपने-अपने पक्ष के समर्थन में क्या तर्क पेश करते हैं ?

उत्तर : एक ग्राहक के रूप में विजय बाबू अपना तर्क पेश करते हुए कहते हैं कि तुम लोगों को झूठ बोलने की आदत होती है। सबको एक ही भाव से सामान बेचते हो ग्राहक को अधिक दाम बताकर उलटा ग्राहक पर ही एहसान का बोझ लाद देते हो।

एक विक्रेता के रूप में मुरलीवाला अपना तर्क पेश करता हुआ कहता है - यह तो ग्राहकों का दस्तूर है कि दुकानदार चाहे हानि उठाकर ही चीज़ें क्यों न बेचे पर ग्राहक को हमेशा यही लगता है कि हम उन्हें लूट रहे हैं। ग्राहक को दुकानदार पर विश्वास नहीं होता है।

प्रश्न 4: खिलौनेवाले के आने पर बच्चों की क्या प्रतिक्रिया होती थी ?

उत्तर: खिलौनेवाले के आने पर बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो उठते थे। वे अपना खेल-कूद भूलकर उसकी ओर दौड़ पड़ते थे| जल्दबाज़ी में उन्हें अपने सामान,जूते-चप्पल आदि का ध्यान न रहता | बच्चों का झुंड खिलौनेवाले को चारों तरफ़ से घेर लेता था। वे पैसे लेकर खिलौने का मोलभाव करने लगते थे।

प्रश्न 5: रोहिणी को मुरलीवाले के स्वर से किसका स्मरण हो आया ?

उत्तर रोहिणी को मुरलीवाले के स्वर से खिलौनेवाले का स्मरण हो आया।

प्रश्न 6: किसकी बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया था ? उसने इन व्यवसायों को अपनाने का क्या कारण बताया ?

उत्तर रोहिणी की बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया। बच्चों को खुश करने के लिए ही वह अलग-अलग वस्तुएँ लाया करता था | इस तरह के जीवन में उसे अपने बच्चों की झलक मिल जाती है। उसे ऐसा लगता है कि उसके बच्चे इन्हीं में कहीं हँस - खेल रहे हैं। यदि वो ऐसा नहीं करता तो उनकी याद में घुल-घुलकर मर जाता, क्योंकि उसके बच्चे अब जिंदा नहीं थे। इसी कारण उसने इन व्यवसायों को अपनाया।

बाल-महाभारत : (पाठ 1 से 10)

प्रश्न 1: महाभारत की रचना किसने की ?

उत्तर : महाभारत की रचना महर्षि पराशर के कीर्तिमान पुत्र वेद व्यास ने की |

प्रश्न 2: शांतनु द्वारा गंगा की शर्त मान लेने का क्या परिणाम हुआ ?

उत्तर : शांतनु द्वारा गंगा की शर्त मान लेने के बाद गंगा उनकी पत्नी बन गई | समय पाकर गंगा से शांतनु के कई तेजस्वी पुत्र हुए,किंतु गंगा उन बच्चों को पैदा होते ही नदी में बहा देती थी और ख़ुशी-ख़ुशी महल चली आती थी |

प्रश्न 3: भीष्म काशीराज की कन्याओं के स्वयंवर में क्यों गए ?

उत्तर: जब विचित्रवीर्य विवाह के योग्य हुए तो,भीष्म को उनके विवाह की चिंता हुई | उन्हें खबर लगी कि काशिराज की कन्याओं का स्वयंवर होनेवाला है | यह जानकार भीष्म बड़े खुश हुए और स्वयंवर में सम्मिलित होने के लिए काशी रवाना हो गए |

प्रश्न 4 : धृतराष्ट्र की कमज़ोरी क्या थी ?

उत्तर: धृतराष्ट्र की कमजोरी उनका पुत्र प्रेम था| वे अपने बेटे दुर्योधन से अपार स्नेह करते थे|

प्रश्न 5: सूर्य-पुत्र कर्ण का पालन-पोषण किसके घर हुआ ?

उत्तर : सूर्य-पुत्र कर्ण का पालन-पोषण अधिरथ नाम के एक सारथि के घर हुआ |

प्रश्न 6: कौरव विशेषकर भीम से क्यों जलते थे ?

उत्तर : भीम शारीरिक बल में सबसे बढ़कर था | वह दुर्योधन और उसके भाइयों को खेल-कूद में खूब तंग किया करता था | यद्यपि कौरवों के प्रति भीम के मन में कोई वैर-भाव नहीं था | वह बचपन के जोश में ऐसा करता था | फिर भी कौरव पांडवों से,विशेषकर भीम से जलते थे |

प्रश्न 7: इंद्र ने वरदान के साथ कर्ण को क्या शर्त बताई ?

उत्तर: इंद्र ने वरदान के साथ कर्ण को यह शर्त बताई कि युद्ध में वह जिस किसी को लक्ष्य करके इसका प्रयोग करेगा, वह अवश्य मारा जाएगा, किंतु इसका प्रयोग वह सिर्फ एक बार ही कर सकेगा | शत्रु को मारने के बाद यह पुन: इंद्र के पास चला आएगा |

प्रश्न 8 : द्रुपद के राजा बनने के बाद द्रौण क्या सोचकर उनके पास गए ?

उत्तर: द्रुपद के राजा बनने की खबर जब द्रौणाचार्य को मिली तो वे बड़े खुश हुए | उन्हें आश्रम में द्रुपद की लड़कपन में कही गई बात याद आई | वे सोचने लगे ," यदि द्रुपद आधा राज्य न भी देगा तो कम-से-कम कुछ धन तो जरूर ही देगा |''

व्याकरण : मुहावरे

व्याकरण निपुण पाठ्यपुस्तक से 1 से 10 मुहावरे नोटबुक में लिखवाए जाएँगे |

(पेज नं. 219,220)

पाठ 7 : पापा खो गए (लेखक : विजय तेंदुलकर)

शब्दार्थ :

कर्कश	-	कठोर
कब्ज़ा	-	अधिकार
स्तब्ध	-	हैरान
हिचकिचाना	-	संकोच करना
प्रेक्षक	-	दर्शक

प्रश्न 1 : नाटक में आपको सबसे बुद्विमान पात्र कौन लगा और क्यों ?

उत्तर नाटक में सबसे बुद्धिमान पात्र कौआ है क्योंकि वह उड़-उडकर सारी दुनिया की खबर रखता था | उसे अच्छे-बुरे की पहचान थी | अन्ततः कौए ने ही अपनी सूझबूझ से लड़की के पापा को ढूंढने का उपाय बताया। उसी की योजना के कारण लैटरबक्स संदेश लिख पाता है।

प्रश्न 2 : पेड़ और खंभे में दोस्ती कैसे हुई?

उत्तर पेड़ और खंभा दोनों पास-पास खड़े होते हैं फिर भी बात नहीं करते थे। कई बार पेड़ ने उससे बात करने की कोशिश की पर खंभे ने कोई ज़वाब नहीं दिया। एक दिन जब ज़ोरों की आंधी आती है तब खंभा पेड़ के ऊपर गिरने से खुद को रोक नहीं पाता। उस वक्त पेड़ खंभे को संभाल लेता है और स्वयं ज़ख्मी हो जाता है। इसी कारण खंभे का गरूर भी खत्म हो जाता है और उसी दिन से दोनों में दोस्ती हो जाती है।

प्रश्न 3 : लैटरबक्स को सभी लाल ताऊ कहकर क्यों पुकारते थे?

उत्तर लैटरबक्स ऊपर से नीचे तक पूरा सिर्फ़ लाल रंग का था। वह बड़ों की तरह बातें भी करता था इसीलिए सभी उसे लाल ताऊ कहकर पुकारते थे।

प्रश्न 4 : लाल ताऊ किस प्रकार बाकी पात्रों से भिन्न है?

उत्तर पूरे नाटक में केवल लाल ताऊ ही एक ऐसा पात्र है जिसे पढ़ना-लिखना आता है। वह अपने-आप में मस्त रहता है। अकेले रहने पर भजन गुनगुनाते रहना उसकी आदत है। लाल ताऊ के यही गुण उसे अन्य सभी पात्रों से भिन्न बनाते हैं।

प्रश्न 5 : नाटक में बच्ची को बचानेवाले पात्रों में एक ही सजीव पात्र कौन-सा है ?

उत्तर नाटक में बच्ची को बचाने वाले पात्रों में कौआ ही एक मात्र सजीव पात्र है।

प्रश्न 6 : क्या वजह थी कि सभी पात्र मिलकर भी लड़की को उसके घर नहीं पहुँचा पा रहे थे?

उत्तर सभी पात्र मिलकर भी लड़की को उसके घर पर नहीं पहुँचा पा रहे थे। क्योंकि लड़की इतनी छोटी और इतनी भोली थी कि उसे अपने घर का पता, गली का नाम, सड़क का नाम,यहाँ तक कि अपने पापा का नाम तक नहीं मालूम था। ऐसी अवस्था में लड़की को उसके घर तक पहुँचाना संभव नहीं था।

पाठ - 8 शाम एक किसान (लेखक : सर्वेश्वरदयाल सक्सेना)

शब्दार्थ :

साफ़ा	-	पगड़ी
चिलम	-	जिसमें आग रखकर चिलम भरी जाती है
दहकना	-	सुलगना , जलना
अँगीठी	-	जिसमें आग जलाई जाती है

प्रश्नों के उत्तर :

प्रश्न 1 आकाश की कल्पना साफ़े के रूप में क्यों की गई है?

उत्तर : साफ़ा सिर पर बाँधा जाता है | आकाश पहाड़ के सिर पर प्रतीत होता है | ऐसा लगता है वह पहाड़ की चोटी को छू रहा हो, साथ ही बादलों के छोटे -छोटे टुकड़े सिर पर बंधे साफ़ों जैसे ही दिखाई देते हैं, इसलिए आकाश की कल्पना साफ़े के रूप में की गई है |

प्रश्न 2 कवि ने अन्धकार को भेड़ों के गल्ले जैसा क्यों कहा है?

उत्तर : जब सूरज पश्चिम दिशा में चला जाता है तो पूरब में अन्धकार धीरे-धीरे बढ़ने लगता है | दूर से देखने पर कहीं अन्धकार तो कहीं धुंधला प्रकाश दिखाई देता है और ऐसा प्रतीत होता है जैसे वहाँ भेड़ों का झुंड बैठा हो | यही कारण है कि कवि ने अन्धकार को भेड़ों के गल्ले जैसा कहा है |

प्रश्न 3 : 'शाम एक किसान' कविता में चित्रित शाम और सूर्यास्त के दृश्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए |

उत्तर : कविता में शाम को एक किसान के रूप में चित्रित किया गया है, जो पहाड़ के रूप में घुटने मोड़े बैठा है | उसके सिर पर आकाश का साफ़ा बंधा है और घुटनों पर नदी की चादर पड़ी है | वह डूबते सूरज की सुलगती चिलम पी रहा है | पास में ही पलाश के लाल -लाल फूलों की अँगीठी दहक रही है और दूर पूरब में अन्धकार भेड़ों के झुंड की तरह धीरे-धीरे बढ़ता आ रहा है | उसी समय मोर अचानक बोल उठता है, शाम रुपी किसान हड़बड़ाकर उठ गया, जिससे चिलम उलट गई और चारों ओर धुंआ उठने लगा अर्थात सूरज डूब गया तथा शाम बीत गई |

प्रश्न 4: किसान के सिर और घुटनों पर कौन-से वस्त्र हैं ?

उत्तर : किसान के सिर पर साफ़ा और घुटनों पर नदी की चादर पड़ी हुई है |

प्रश्न 5: पलाश के जंगल की तुलना अँगीठी से क्यों की गई है ?

उत्तर : पलाश के जंगल की तुलना अँगीठी से की गई है क्योंकि पलाश के फूल सुर्ख लाल होते हैं| पलाश के जंगल को दूर से देखने पर ऐसा लगता है जैसे अँगीठी दहक रही हो |

प्रश्न 6: आवाज़ से चिलम क्यों औंधी हो गई ?

उत्तर : आवाज़ सुनकर शाम रुपी किसान हड़बड़ाकर उठ गया होगा, जिससे असावधानी के कारण चिलम उलट गई होगी |

क्रियात्मक : विज्ञापन-लेखन

किसी पेन्सिल निर्माता कंपनी के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए |

अभ्यास हेतु -

(i) नोटबुक निर्माता कंपनी के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए |

(ii) किसी स्मार्ट फ़ोन निर्माता कंपनी के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए |

क्रियात्मक : अपठित काव्यांश

वीर जवानों सुनो, तुम्हारे सम्मुख ----------

---------- वह फैलाता जाल है |
(व्याकरण निपुण पेज नं. 269)

व्याकरण : श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

व्याकरण निपुण पाठ्यपुस्तक से 1 से 20 श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द नोटबुक में लिखवाए जाएँगे | (पेज नं. 55)

व्याकरण : विलोम शब्द

व्याकरण निपुण पुस्तक से 21 से 40 विलोम शब्द नोटबुक में लिखवाए जाएँगे |
(पेज नं. 51)

क्रियात्मक : औपचारिक पत्र

प्रधानाचार्य जी को आवेदनपत्र लिखिए जिसमें पुस्तकालय में से कुछ और हिंदी पत्रिकाएँ मँगवाने के लिए निवेदन किया गया हो |

अभ्यास हेतु :

(i) अपने घर में चोरी हो जाने की सूचना देते हुए पुलिसथाना अधिकारी को पत्र लिखिए|

(ii) किसी अन्य विद्यालय से क्रिकेट मैच के आयोजन की अनुमति माँगते हुए प्रधानाचार्य जी को पत्र लिखिए |

अनुच्छेद लेखन

भारत के राष्ट्रीय पर्व :

संकेत बिंदु - भूमिका, विविध राष्ट्रीय पर्व, ऐतिहासिक कारण, राष्ट्रीय पर्व मनाने का ढंग, सन्देश तथा कर्त्तव्य, निष्कर्ष |

अभ्यास हेतु :

(i) छात्रों पर दूरदर्शन का प्रभाव : भूमिका, मनोरंजन का माध्यम, शिक्षा का माध्यम, दूरदर्शन का सही उपयोग, समापन |

(ii) परोपकार : भूमिका, दूसरों की हित कामना, महापुरुषों के उदाहरण , सामजिक जीवन में परोपकार आवश्यक, समापन |

पाठ 9 - चिड़िया की बच्ची (लेखक: जैनेंद्र कुमार)

शब्दार्थ :

अभिरुचि	-	दिलचस्पी
मसनद	-	तकिया
तृष्णा	-	चाह
नादान	-	नासमझ
चित्त	-	मन

प्रश्नों के उत्तर :-

प्रश्न - 1 किन बातों से ज्ञात होता है कि माधवदास का जीवन संपन्नता से भरा था और किन बातों से ज्ञात होता है कि वह सुखी नहीं था?

उत्तर - माधवदास अपने लिए संगमरमर की एक नई कोठी बनवाते हैं। चिड़िया को धन का, सोने का घर बनवाने तथा मोतियों की झालर लटकाने का प्रलोभन देता है। वो चिड़िया से कहता है - ''मेरे पास क्या नहीं है। जो माँगो मैं दे सकता हूँ।" माधवदास जी की इन बातों से ज्ञात होता है कि उनका जीवन संपन्नता से भरा था।

वहीं दूसरी ओर ऐसा भी लगता है कि धन-संपन्न होने के बावजूद भी वे सुखी नहीं है। माधवदास स्वयं भी चिड़िया से यह कहता है कि उसका महल सूना है | वहाँ कोई भी नहीं चहचहाता | इससे यह स्पष्ट होता है कि उनका जीवन सुखी नहीं था।

प्रश्न 2 - माधवदास क्यों बार-बार चिड़िया से कहता है कि यह बगीचा तुम्हारा ही है ? क्या माधवदास निःस्वार्थ मन से ऐसा कह रहा था ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर - माधवदास ऐसा कहता है क्योंकि उसे चिड़िया बहुत ही सुन्दर और प्यारी लगी। वह चिड़िया को हमेशा अपने पास रखना चाहता था। उसे देख-देख कर वह अपना मन बहलाना चाहता था। वह केवल अपनी खुशी के लिए, अपना मन बहलाने के लिए ऐसा कर रहा था। इसलिए माधवदास की इस भावना में उसका निजी स्वार्थ है।

प्रश्न 3 - कहानी के अंत में नन्ही चिड़िया का सेठ के नौकर के पंजे से भाग निकलने की बात पढ़कर तुम्हें कैसा लगा?

उत्तर - कहानी के अंत में हमने पढ़ा कि सेठ की सभी चेष्टाओं के बावजूद नन्ही चिड़िया सेठ के नौकर के पंजे से भाग निकलने में सफल होती है। यह कहानी का सुखद अंत है।

यदि ऐसा नहीं होता तो कहानी का अंत अत्यंत दुखद होता और ऐसा प्रतीत होता है कि अच्छाई पर बुराई की जीत हो गई। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं होता और चिड़िया सुरक्षित अपनी माँ के पास पहुँच जाती है। चिड़िया के अस्तित्व की सफलता उसके बंधन मुक्त होकर स्वच्छंदता पूर्वक आकाश में उड़ने में है। वह अपने परिवार तथा अपनी माँ का स्नेह पाकर खुश रहती है।

प्रश्न 4 - इस कहानी का कोई और शीर्षक देना हो तो आप क्या देना चाहेंगे और क्यों?

उत्तर - इस कहानी का शीर्षक **'जीवन का सच्चा सुख'** अधिक युक्तिपूर्ण प्रतीत होता है क्योंकि यहाँ जीवन के सुख को लेकर दो विचारों की टकराहट है। एक तरफ जहाँ धनी सेठ के लिए धन-दौलत, सुख सुविधाएँ ही जीवन की खुशी तथा वास्तविकता है। वहीं दूसरी ओर नन्ही चिड़िया के लिए उसकी माँ अमूल्य रत्न से भी अधिक मूल्यवान है।

प्रश्न 5 - क्या माधवदास ने सचमुच ही वह बगीचा चिड़िया के लिए बनवाया था ?

उत्तर - नहीं, माधवदास ने वह बगीचा अपने लिए बनवाया था | वे तो चिड़िया को अपने जाल में फँसाना चाहते थे, इसलिए ऐसा कहा था |

प्रश्न - 6 माधवदास को चिड़िया कैसी लगी ?

उत्तर - माधवदास को चिड़िया बहुत ही सुन्दर और प्यारी लगी।

व्याकरण : विशेषण

जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता का बोध हो, उन्हें विशेषण कहते हैं | विशेषण के चार भेद हैं -

(i) गुणवाचक विशेषण (ii) संख्यावाचक विशेषण
(iii) परिमाणवाचक विशेषण (iv) सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण

- **गुणवाचक विशेषण :** जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुणों या दोषों का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहा जाता है | जैसे- अच्छा, आलसी, कड़वा, मीठा, ताकतवर,ग्रामीण,प्राचीन आदि |
- **संख्यावाचक विशेषण :** जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहा जाता है | इसके दो प्रकार होते हैं-

(i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण : जैसे- मुझे चार कापियाँ चाहिए |
(ii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण : जैसे- थोड़े सेब मुझे भी दे दो |

- **परिमाणवाचक विशेषण :** जिन विशेषणों से संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के माप-तौल संबंधी विशेषता का बोध होता है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहा जाता है | इसके दो प्रकार होते हैं-
  (i) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण : पाँच लीटर दूध दे दो |
  (ii) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण : डिब्बे में बहुत चावल हैं |
- **सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण :** जब कोई सर्वनाम किसी संज्ञा के साथ लगकर उसकी विशेषता बताने, या उसकी ओर संकेत करने का काम करता है, तो उसे संकेतवाचक विशेषण कहा जाता है | जैसे- उस लड़की को बुलाओ |

अभ्यास कार्य -

अभ्यास कार्य में प्रश्न संख्या 2, 5, व 7 का कार्य नोटबुक में करवाया जायेगा | तथा प्रश्न संख्या 4, व 6 का कार्य पाठ्यपुस्तक में ही करवाया जायेगा (पेज नं.152 ,153)

पाठ 10 - अपूर्व अनुभव (लेखक: तेत्सुको कुरियानागी)

शब्दार्थ :

आरामदेह	-	आराम देने वाला
धकियाना	-	धक्का देना
द्विशाखा	-	पेड़ का वह भाग जहाँ दो शाखाएँ फूटती हैं
तरबतर	-	लथपथ

प्रश्नों के उत्तर :-

प्रश्न - 1 अपनी माँ से झूठ बोलते समय तोत्तो-चान की नज़रें नीचे क्यों थीं?

उत्तर - तोत्तो-चान अपनी माँ के इच्छा के विरूद्ध झूठ बोलकर यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ाने के लिए लेकर जा रही थी। कहीं उसकी चोरी पकड़ी न जाए। इसी डर के कारण झूठ बोलते समय तोत्तो-चान की नज़रें नीचे थी।

प्रश्न 2 - यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ाने के लिए तोत्तो-चान ने अथक प्रयास क्यों किया?

उत्तर - यासुकी-चान को पोलियो था, इसलिए वह किसी पेड़ पर नहीं चढ़ पाता था। तोत्तो-चान की अपनी इच्छा थी कि वह यासुकी-चान को अपने पेड़ पर आमंत्रित करके तमाम नई-

नई चीज़ें दिखाए । यही कारण था कि उसे पेड़ पर चढ़ाने के लिए तोत्तो-चान ने अथक परिश्रम किया |

प्रश्न - 3 दृढ़ निश्चय और अथक परिश्रम से सफलता पाने के बाद तोत्तो-चान और यासुकी-चान को अपूर्व अनुभव मिला पर, दोनों में क्या अंतर रहे ? लिखिए।

उत्तर - यासुकी-चान तथा तोत्तो-चान दोनों को अन्ततः पेड़ पर चढ़ने में सफलता मिली परन्तु दोनों की सफलता का अनुभव अलग-अलग था। यासुकी-चान को पोलियो था | वह किसी पेड़ पर नहीं चढ़ पाता था फिर भी उसका लक्ष्य पेड़ पर चढ़ना था। परन्तु तोत्तो चान का उद्देश्य यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ाना था। तोत्तो-चान के अथक परिश्रम के कारण ही पहली बार पेड़ पर चढ़कर यासुकी-चान को अपूर्व खुशी मिली | तोत्तो-चान को भी अपने परिश्रम की सफलता पर अपूर्व संतुष्टि मिली।

प्रश्न - 4 'यासुकी-चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह…….अंतिम मौका था।' लेखिका ने ऐसा क्यों लिखा होगा?

उत्तर - यासुकी-चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह पहला और अंतिम मौका था। क्योंकि तोत्तो-चान के अथक परिश्रम के कारण ही यासुकी-चान पहली बार पेड़ पर चढ़ पाया | यासुकी-चान के लिए स्वयं अपने बल पर पेड़ पर चढ़ना संभव नहीं था और तोत्तो-चान के लिए भी दुबारा इस तरह का जोखिम उठाना संभव नहीं था।

प्रश्न - 5 तोमोए की क्या विशेषता थी?

उत्तर - तोमोए में हर एक बच्चा बाग के एक-एक पेड़ को अपने खुद के चढ़ने के लिए अपनाता था इसे उस बच्चे का निजी पेड़ कहा जाता था |

प्रश्न 6 : बच्चे दूसरे के पेड़ों पर क्यों नहीं चढ़ते थे ?

उत्तर : हर पेड़ किसी-न-किसी बच्चे की निजी संपत्ति होता था, इसलिए बिना अनुमति के बच्चे दूसरे के पेड़ों पर नहीं चढ़ते थे |

बाल महाभारत (पाठ 11 से 20 तक)

प्रश्न - 1 द्रौपदी के स्वयंवर के लिए राजा द्रुपद की क्या शर्त थी ?

उत्तर - द्रौपदी स्वयंवर के लिए राजा द्रुपद की शर्त थी कि जो राजकुमार पानी में प्रतिबिम्ब देखकर धनुष से तीर चलाकर ऊपर टंगे हुए निशाने (मछली) को बेधकर गिरा देगा उसी राजकुमार को द्रौपदी वरमाला पहनाएगी |

प्रश्न - 2 राजसूय यज्ञ में किसकी अग्रपूजा की गई ?

उत्तर - राजसूय यज्ञ में श्री कृष्ण की अग्रपूजा की गई ?

प्रश्न - 3 जुए के खेल के विषय में विदुर ने क्या विचार व्यक्त किए ?

उत्तर - जुए के खेल के विषय में विदुर बोले - इससे सारे वंश का नाश हो जाएगा | कुल के लोगों में आपसी मन-मुटाव और झगड़े-फसाद होंगे | इसकी भारी विपदा हम पर आएगी और झेलनी पड़ेगी |

प्रश्न - 4 विदुर पांडवों के पास किस चीज़ का न्यौता देने के लिए गए ?

उत्तर - विदुर पांडवों के पास चौसर के खेल में भाग लेने का न्यौता देने के लिए गए |

प्रश्न - 5 द्रौपदी की दुखभरी गाथा सुनकर श्री कृष्ण ने उसे सांत्वना देते हुए क्या संकल्प लिया ?

उत्तर - द्रौपदी की दुखभरी गाथा को सुनकर श्री कृष्ण बोले- बहन द्रौपदी, जिन्होंने तुम्हारा अपमान किया है, उन सबकी लाशें युद्ध के मैदान में खून से लथपथ होकर पड़ी होंगी | तुम शोक न करो | मैं वचन देता हूँ कि पांडवों की हर प्रकार से सहायता करूँगा |

प्रश्न - 6 हनुमान ने भीम को आशीर्वाद देते हुए क्या कहा ?

उत्तर - हनुमान ने भीम को आशीर्वाद देते हुए कहा, "भीम, युद्ध के समय तुम्हारे भाई अर्जुन के रथ पर उड़नेवाली ध्वजा पर मैं विद्यमान रहूँगा | विजय तुम्हारी ही होगी |"

प्रश्न - 7 पांडवों के वनवास के समय दुर्योधन ने कर्ण से क्या कहा ?

उत्तर: वनवास के समय दुर्योधन ने कर्ण से कहा," कर्ण मैं चाहता हूँ कि पांडवों को मुसीबत में पड़े हुए अपनी आँखों से देखूँ, इसलिए तुम और मामा शकुनि कुछ ऐसा उपाय करो कि वन में जाकर पांडवों को देखने की अनुमति पिताजी से मिल जाए |"

प्रश्न - 8 युधिष्ठिर ने सबसे पहले पानी लाने के लिए किसे भेजा ?

उत्तर - युधिष्ठिर ने सबसे पहले पानी लाने के लिए नकुल को भेजा |

प्रश्न - 9 युधिष्ठिर को अपने मृत पड़े भाइयों को देखकर किस चीज़ का भय हुआ ?

उत्तर - युधिष्ठिर ने अपने चारों भाइयों को मृत देखा तो उनकी आँखों से आँसू निकल पड़े | फिर लगा कि यह किसी का मायाजाल है | वहाँ पर किसी शत्रु के पाँव के निशान भी नज़र नहीं आ रहे थे | उन्हें लगा कि यह भी शायद दुर्योधन का ही षड्यंत्र है या संभव है पानी में विष मिला हो |

पाठ 3:हिमालय की बेटियाँ (लेखक : नागार्जुन)

शब्दार्थ :

सभ्रांत	-	शिष्ट
कौतुहल	-	जिज्ञासा
प्रतिदान	-	लौटाना
खुमारी	-	आलस
उपत्यका	-	तराई , घाटी

प्रश्न 1:नदियों को माँ मानने की परंपरा हमारे यहाँ काफ़ी पुरानी है। लेकिन लेखक नागार्जुन उन्हें और किन रूपों में देखते हैं ?

उत्तर :नदियों को माँ मानने की परपंरा से पहले लेखक इन नदियों को स्त्री के सभी रूपों में देखता है | लेखक नदियों को हिमालय की बेटी कहता है। कभी वह इन्हें प्रेयसी की भांति प्रेममयी कहता है, जिस तरह से एक प्रेयसी अपने प्रियतम से मिलने के लिए आतुर है उसी तरह ये नदियाँ सागर से मिलने को आतुर होती हैं, तो कभी लेखक को उसमें ममता के स्वरूप में बहन के समान प्रतीत होती हैं,जिसके सम्मान में वो हमेशा हाथ जोड़े शीश झुकाए खड़ा रहता है।

प्रश्न 2:सिंधु और ब्रह्मपुत्र की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं ?

उत्तर :इनकी विशेषताएँ इस प्रकार हैं :-

(i) सिंधु और ब्रह्मपुत्र ये दोनों ही महानदी हैं।

(ii) इन दोनों महानदियों में सारी नदियों का संगम होता है।

(iii) ये भौगोलिक व प्राकृतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण नदियाँ हैं। ये डेल्टाफार्म करने के लिए, मत्स्य पालन, चावल की फसल व जल स्रोत का उत्तम साधन हैं।

(iv) ये दोनों ही पौराणिक नदियों के रूप में विशेष पूजनीय व महत्वपूर्ण हैं।

प्रश्न 3:काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है ?

उत्तर:नदियों को लोकमाता कहने के पीछे काका कालेलकर का नदियों के प्रति सम्मान है। क्योंकि ये नदियाँ आरम्भिक काल से ही माँ की भांति हमारा भरण-पोषण करती आ रही हैं। ये हमें पीने के लिए पानी देती है तो दूसरी तरफ इनके द्वारा लाई गई ऊपजाऊ मिट्टी खेती के लिए बहुत उपयोगी होती है। हिन्दू धर्म में तो ये नदियाँ पौराणिक आधार पर भी विशेष पूजनीय हैं। हिन्दू धर्म में तो जीवन की अन्तिम यात्रा भी इन्हीं से मिलकर समाप्त हो जाती है। इसलिए ये हमारे लिए माता के समान है जो सबका कल्याण ही करती हैं।

प्रश्न 4 : हिमालय की यात्रा में लेखक ने किन-किन की प्रशंसा की है ?

उत्तर: लेखक ने हिमालय की यात्रा में नदियों, पर्वतों, बर्फीली-पहाड़ियों, हरी-भरी घाटियों, गहरी गुफाओं, उपवनों, वनों तथा सागरों की प्रशंसा की है |

व्याकरण : वर्ण-विचार

वर्ण:- वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं,जिसके खंड या टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं |

हिंदी वर्णमाला में वर्ण दो प्रकार के होते हैं -**(1) स्वर (2) व्यंजन**

स्वर:- जिन वर्णों के उच्चारण के समय बिना किसी रूकावट के मुख से हवा निकलती है,उन्हें स्वर कहते हैं |

जैसे - अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

व्यंजन :- जिन वर्णों के उच्चारण के समय मुख से निकलने वाली वायु में रूकावट पड़ती है,उन्हें व्यंजन कहते हैं |

जैसे- क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग, तथा य, र, ल, व,श, ष, स, ह

अनुनासिक :- जिस ध्वनि के उच्चारण में साँस की हवा कुछ तो नाक से निकल जाए और कुछ मुँह से निकले वह अनुनासिक ध्वनि कहलाती है| इसका चिह्न चंद्रबिंदु (ँ) होता है|

जैसे - आँख , चाँद , आँगन आदि |

अनुस्वार :- जिस ध्वनि के उच्चारण में साँस की हवा केवल नाक से निकल जाए, वह अनुस्वार ध्वनि कहलाती है | इसका चिह्न बिंदु (ं) होता है |

जैसे - संत , गंगा , पंख ,रंग आदि |

विसर्ग :-विसर्ग ध्वनि का उच्चारण ' ह ' ध्वनि के समान होता है |

जैसे- अतः, प्रातः आदि |

वर्ण-विच्छेद:- किसी शब्द में प्रयुक्त वर्णों को अलग-अलग करने को वर्ण-विच्छेद कहते हैं |

अभ्यास कार्य

अभ्यास कार्य में प्रश्न संख्या 4,5,व 6 का कार्य नोटबुक में करवाया जाएगा | (पेज नं.25)

क्रियात्मक: औपचारिक पत्र

रेल यात्रा के दौरान सामान चोरी हो जाने की सूचना देते हुए रेलवे पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखिए |

अभ्यास हेतु :

(i) अपने क्षेत्र की गन्दगी की सूचना देते हुए नगर पालिका के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए |

(ii) किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को अपने शहर की बसों की बिगड़ती हालत और कुव्यवस्था की जानकारी देते हुए पत्र लिखिए |

पाठ 4: कठपुतली (लेखक : भवानीप्रसाद मिश्र)

शब्दार्थ:

कठपुतली -धागे से बंधी गुड़िया जिसे अँगुलियों के इशारों पर नचाया जाता है |

उबली -गुस्से से भर जाना

मन के छंद छूना -मन की बात सुनना

प्रश्न 1:कठपुतली को गुस्सा क्यों आया?

उत्तर:कठपुतली को गुस्सा आया क्योंकि वो धागे में बंधी हुई पराधीन है और वह स्वतंत्रता की इच्छा रखती है।

प्रश्न 2:कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है, लेकिन वह क्यों नहीं खड़ी होती?

उत्तर:कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है लेकिन वह खड़ी नहीं होती क्योंकि वह धागे से बंधी हुई होती है, उसके अन्दर स्वतंत्रता के लिए लड़ने की क्षमता नहीं है और अपने पैरों पर खड़े होने की शक्ति भी नहीं है।

प्रश्न 3:पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगी ?

उत्तर:पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को अच्छी लगी क्योंकि पहली कठपुतली स्वतंत्र होने की बात कर रही थी और दूसरी कठपुतलियाँ भी बंधन से मुक्त होकर आज़ाद होना चाहती थीं। किसी भी कठपुतली को धागे में बंधे रहना पसंद नहीं था |

प्रश्न 4: 'कठपुतली' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर: कविता के माध्यम से कवि ने स्वतंत्रता के महत्त्व को रेखांकित किया है, साथ ही स्वतंत्रता के साथ आनेवाली जिम्मेदारियों की तरफ सबका ध्यान आकर्षित किया है | आज़ाद होना सभी को अच्छा लगता है लेकिन आज़ादी का सही उपयोग कम ही लोग कर पाते हैं | इतना ही नहीं आज़ादी के बाद आत्मनिर्भर भी होना पड़ता है | आज़ादी हाँसिल करके अपनी जरूरतों के लिए दूसरों पर आश्रित नहीं रहा जा सकता | आज़ाद होने के बाद स्वावलंबी होना भी जरूरी होता है |

प्रश्न 5 : कठपुतली सजीव होती है या निर्जीव ?

उत्तर: कठपुतली निर्जीव होती है,लेकिन कविता में कवि ने उसका चित्रण सजीव रूप में किया है |

व्याकरण :शब्द-विचार

शब्द :एक या एक से अधिक वर्णों से बने सार्थक ध्वनि-समूह को शब्द कहते हैं |
शब्दों का वर्गीकरण निम्नलिखित चार आधारों पर किया गया है -

(i) स्रोत / उत्पत्ति के आधार पर
(ii) रचना / बनावट के आधार पर
(iii) प्रयोग के आधार पर
(iv) अर्थ के आधार पर

<u>स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर :</u>शब्द के चार प्रकार होते हैं -

(i) तत्सम शब्द - अग्नि, सूर्य , चन्द्र , गृह आदि
(ii) तद्भव शब्द - आग, सूरज, चाँद, घरआदि
(iii) देशजशब्द - खिड़की, गाड़ी, पगड़ी, चिड़िया आदि
(iv) विदेशी शब्द - बेगम, टिकट, कमीज़, जहाज़आदि

<u>रचना/बनावट के आधार पर :</u> शब्दों के तीन भेद हैं -

(i) रूढ़ शब्द - पुस्तक, कमल, घर
(ii) यौगिक शब्द - रसोई+ घर (रसोईघर)
(iii) योगरूढ़ शब्द - जल+ द - जलद(बादल)

<u>प्रयोग के आधार पर :</u> शब्द दो प्रकार के होते हैं -

(i) विकारी शब्द
(ii) अविकारी शब्द

<u>अर्थ के आधार पर :</u>शब्द दो प्रकार के होते हैं -

(i) सार्थक शब्द
(ii) निरर्थक शब्द

अभ्यास कार्य -
अभ्यास कार्यमेंप्रश्न संख्या 2, 3, 5का कार्य नोटबुक में तथा प्रश्न संख्या 6 ,7 का कार्य व्याकरण पाठ्यपुस्तक में करवाया जायेगा | (पेज नं.45, 46)

क्रियात्मक : संवाद लेखन

कुसंगति का त्याग और समय के सदुपयोग के संबंध में दो भाइयों के बीच संवाद लिखिए |
अभ्यास हेतु :
(i) आँखों देखी दुर्घटना के संबंध में पुत्र और पिता क मध्य संवाद लिखिए |
(ii) रेलवे स्टेशन के पूछताछ काउंटर पर यात्री तथा अधिकारी के बीच संवाद लिखिए|

व्याकरण :विलोम शब्द

व्याकरण निपुण पाठ्यपुस्तक से 1 से 20 तक विलोमशब्द नोटबुक में लिखवाए जाएँगे |
(पेज नं. 51)

पाठ : 1 हम पंछी उन्मुक्त गगन के
लेखक : शिवमंगल सिहं 'सुमन'

शब्दार्थ :

पुलकित - खुशी से फड़कते
कटुक - कड़वी
निबौरी - नीम का फल
कनक - सोना
फुनगी - टहनी का सबसे ऊपरी भाग

प्रश्नोत्तर :-

प्रश्न 1: हर तरह की सुख सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते ?

उत्तर : पक्षी के पास वो सारी सुख सुविधाएँ हैं, जो उनके जीवन के लिए आवश्यक है। परन्तु वह स्वतंत्रता नहीं है, जो उन्हें प्रिय हैं। वे इस खुले आकाश में आज़ादीपूर्वक उड़ना चाहते हैं। इस प्रकार की उड़ान उनमें नई उमंग व प्रसन्नता भर देती है, जो पिंजरे की सुख-सुविधाएँ नहीं दे सकती है। इसलिए हर तरह की सुख सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद नहीं रहना चाहते हैं।

प्रश्न 2: पक्षी उन्मुक्त रहकर अपनी कौन-कौन सी इच्छाएँ पूरी करना चाहते हैं ?

उत्तर : पक्षी उन्मुक्त रहकर जंगल की कड़वी निबौरी खाना चाहते हैं, प्रकृति के सुन्दर रूप का आनन्द लेना चाहते हैं, खुले नीले आकाश में उन्मुक्त उड़ान भरना चाहते हैं। वे नदियों का शीतल जल पीना चाहते हैं, वे तो क्षितिज के अन्त तक उड़कर जाना चाहते हैं। इसके लिए उनको अपने प्राणों की भी चिन्ता नहीं है। वे पेड़ की टहनी के सबसे ऊँचे सिरे पर बैठकर झूला झूलना चाहते हैं |

प्रश्न 3: भाव स्पष्ट कीजिए-
'या तो क्षितिज मिलन बन जाता, या तनती साँसों की डोरी |'

उत्तर : क्षितिज का अर्थ है जहाँ धरती आकाश मिलते हैं और पक्षी क्षितिज के अन्त तक जाने की लालसा रखते हैं फिर चाहे उन्हें किसी भी स्थिति का सामना करना पड़े। वो चाहते हैं या तो आज वह क्षितिज का अन्तिम छोर ही प्राप्त कर लें अन्यथा अपने प्राणों को न्योछावर कर दें।

प्रश्न 4 : पक्षी हमसे क्या चाहते हैं ?

उत्तर : पक्षी हमसे अपने उड़ने का अधिकार चाहते हैं | इसके बदले वे अपना घोंसला और टहनी का आश्रय भी देने को तैयार हैं |

प्रश्न 5 : हम पंछी उन्मुक्त गगन के कविता के लेखक कौन हैं ?

उत्तर : हम पंछी उन्मुक्त गगन के कविता के लेखक शिवमंगल सिंह 'सुमन' हैं |

प्रश्न 6 : अंत में पंछी विनयपूर्वक क्या कहते हैं ?

अंत में पक्षी मानव से विनती करते हुए कहते हैं कि तुम चाहे हमारे घोंसले और आश्रय उजाड़ दो हमें मंजूर है ,लेकिन कुदरत ने पंख दिए हैं तो उड़ने की आज़ादी मत छीनो, यही तो हमारा जीवन है।

पाठ 2 दादी माँ
लेखक : शिवप्रसाद सिंह

शब्दार्थ :

अनमना	-	बेचैन, अनमना
प्रतिकूलता	-	विपरीत स्थिति
अभयदान	-	निर्भीकता प्रदान करना
अतुल	-	बहुत अधिक

प्रश्न 1: लेखक को अपनी दादी माँ की याद के साथ-साथ बचपन की और किन-किन बातों की याद आ जाती है ?

उत्तर : लेखक को अपनी दादी माँ की याद के साथ-साथ गाँव,घर,और परिवार की अनेक बातें याद आती हैं -

- क्वार के दिनों में जलाशय के झागभरे पानी में कूदकर नहाना |
- आषाढ़ में आम-जामुन, अगहन में चिउड़ा-गुड़, चैत में लाई तथा गुड़ की पट्टी खाना|
- बीमार होने पर दादी माँ की स्नेहपूर्ण देखभाल |
- किशन भैया की शादी में औरतों का अभिनय चोरी से देखना |
- दादी माँ द्वारा धन्नो को कर्ज के लिए डाँटना, फिर कर्ज माफ़ कर देना |

प्रश्न 2: दादा की मृत्यु के बाद लेखक के घर की आर्थिक स्थिति खराब क्यों हो गई थी?

उत्तर : दादा की मृत्यु के बाद लेखक के घर की आर्थिक स्थिति इसलिए खराब हो गई क्योंकि उनके श्राद्ध में लेखक के पिताजी ने अतुल संपत्ति व्यय की और पहले का उधार लिया रूपया कोई नहीं दे रहा था।

प्रश्न 3 : दादी माँ के स्वभाव का कौन - सा पक्ष आपको सबसे अच्छा लगता है और क्यों?

उत्तर : दादी माँ का स्वभाव दयालु है। उनके स्वभाव का यही पक्ष सबसे अच्छा लगता है। दादी माँ अपने घर के सदस्य से लेकर गरीबों तक की मदद करने से पीछे नहीं हटती हैं।

जैसे- (i) रामी चाची के उधार न चुकाने पर भी दादी माँ उनकी बेटी की शादी में आर्थिक सहायता करती हैं।

(ii) घर की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण दादी माँ ने दादा जी द्वारा पहनाया गया कंगन अपने बच्चों को दे दिए।

प्रश्न 4 : दादी माँ रामी की चाची पर क्यों बिगड़ रही थीं ?

उत्तर : रामी की चाची ने दादी माँ से कर्ज लिया था | समय बीत गया था और वह न मूल पैसे दे रही थी और न सूद, इसलिए दादी उस पर बिगड़ रही थीं |

प्रश्न 5 : देबू की माँ ने लेखक से हाथापाई क्यों शुरू कर दी ?

उत्तर : किशन भैया की बारात चले जाने के बाद रातभर स्त्रियों के अभिनय का कार्यक्रम था | लेखक चादर ओढ़कर दालान में सोया था और सबकी नज़र बचाकर अभिनय का मजा ले रहा था | उसी समय भाभी की किसी बात पर उसकी हँसी रुक न सकी | बस, देबू की माँ ने चादर खींच ली और हाथापाई शुरू हो गई |

व्याकरण : भाषा,बोली,लिपि और व्याकरण

भाषा : भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर,लिखकर,पढ़कर व सुनकर अपने मन के विचारों तथा भावों का आदान-प्रदान करता है |

भाषा के रूप : भाषा के दो रूप हैं -

(i) मौखिक (जैसे- कक्षा में अध्यापक बोलकर छात्रों को समझाते हैं |)

(ii) लिखित (जैसे-अध्यापक गणित के सवाल श्यामपट्ट पर लिखकर हल करते हैं |)

बोली : किसी क्षेत्र विशेष में बोली जानेवाली भाषा बोली कहलाती है | जैसे-

हरियाणा	-	हरियाणवी
मणिपुर	-	मणिपुरी
राजस्थान	-	राजस्थानी
असम	-	असमिया
कश्मीर	-	कश्मीरी

लिपि : उच्चरित ध्वनियों को लिखने की विधि को लिपि कहते हैं | जैसे-

हिंदी	-	देवनागरी
अंग्रेजी	-	रोमन
उर्दू	-	फ़ारसी
पंजाबी	-	गुरूमुखी

व्याकरण : वह शास्त्र जिसके द्वारा मनुष्य किसी भाषा को शुद्ध रूप से पढ़ना, लिखना व बोलना सीखता है, उसे व्याकरण कहते हैं |

व्याकरण के भाग :

(i) वर्ण-विचार

(ii) शब्द-विचार

(iii) वाक्य-विचार

अभ्यास कार्य

अभ्यास हेतु प्रश्न संख्या 1,5,व 7 का कार्य नोटबुक में करवाया जायेगा | (पेज नं. 11,12)

क्रियात्मक : अपठित गद्यांश

' सहपाठी की मित्रता ' इस उक्ति में ---------- अपना हानि – लाभ समझे | (व्याकरण निपुण पेज नं. 267)

अनुच्छेद लेखन

विद्यार्थी जीवन :

संकेत बिंदु - भूमिका – विद्यार्थी जीवन की अवस्था – विद्यार्थी का कर्तव्य – अनुशासन – विद्यार्थी जीवन की उन्नति - निष्कर्ष |

अभ्यास हेतु :

(i) **मित्रता :** भूमिका – सच्ची मित्रता – जीवन का वरदान – मित्रता के लाभ – समापन|

(ii) **कोशिश करने वालों की हार नहीं होती :**– भूमिका – सभी का लक्ष्य – कोशिश द्वारा लक्ष्य की प्राप्ति – चींटी प्रेरणा का स्त्रोत – समापन |

व्याकरण : पर्यायवाची शब्द

व्याकरण निपुण पाठ्यपुस्तक से 1 से 20 पर्यायवाची शब्द नोटबुक में लिखवाए जाएँगे |

(पेज नं. 47 ,48)

क्रियात्मक :चित्र वर्णन

चित्र वर्णन (व्याकरण निपुण पाठ्यपुस्तक पेज नं. 164)

काव्य 11: रहीम के दोहे

शब्दार्थ -

कसौटी - परीक्षा
परकाज - परोपकार
सरवर - सरोवर
मेह - बादल

प्रश्न 1 रहीम ने क्वार के मास में गरजने वाले बादलों की तुलना किससे की है ?
उत्तर- रहीमजी ने क्वार के मास में गरजने वाले बादलों की तुलना निर्धन व्यक्तियों से की है |

प्रश्न 2 वृक्ष और सरोवर किस प्रकार दूसरों की भलाई करते हैं ?

उत्तर - वृक्ष हमें फल देते हैं, परन्तु वे स्वयं उनका उपभोग नहीं करते | वृक्ष दूसरों की भलाई के लिए ही फल उगाते हैं | सरोवर भी अपना जल स्वयं न पीकर समाज के कल्याण के लिए ही जल संचित करता है |

प्रश्न 3 रहीम के दोहों से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर - रहीमजी के दोहे जीवन की वास्तविकता से परिचय कराते हैं और प्रकृति से सीख लेने की प्रेरणा देते हैं | इन दोहों में सच्चे मित्र की पहचान बताई गई हैं, जो संकट में कभी साथ नहीं छोड़ते | रहीमजी वृक्ष और सरोवर की ही तरह अपने संचित धन को जन- कल्याण में खर्च करने की सीख देते हैं | रहीमजी यही सिखाते हैं कि दुःख के दिनों में सुख के दिनों की याद करना खोखलेपन की निशानी है | अंतिम दोहे में रहीमजी मनुष्य को, धरती की तरह हर परिवर्तन को सहज भाव से स्वीकार करने की शिक्षा देते हैं |

प्रश्न 4 रहीम ने किस प्रकार मनुष्य को परोपकारी बनने का संदेश दिया है ?

उत्तर - रहीमजी ने दोहों के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि जिस प्रकार वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते, सरोवर अपना जल स्वयं नहीं पीता, उसी प्रकार सज्जन पुरुष भी परोपकार के लिए ही धन- संचय करते हैं | यदि इस सच्चाई को हम अपने जीवन में उतार लें तो समाज में पूरी तरह परिवर्तन आ जाएगा | परोपकार की भावना से किया गया कार्य देश की उन्नति में सहायक होता है |

प्रश्न 5 मछलियाँ किसके प्रति अपना लगाव क्यों नहीं छोड़ पाती ? उनके लगाव का क्या परिणाम होता है ?

उत्तर - मछलियाँ जल के प्रति अपना लगाव नहीं छोड़ पाती | रहीम जी मछली के एक तरफा प्रेम को समझाते हुए कहते हैं कि जाल में मछली के फँसते ही पानी मछली का मोह छोड़कर आगे बह जाता है लेकिन मछली पानी के प्रति अपने प्रेम को नहीं छोड़ पाती | यही प्रेम अर्थात पानी मछली के प्राण ले लेता है |

पाठ - 12 कंचा (लेखक : टी पद्मनाभन)

शब्दार्थ -

कर्मठ	-	कर्तव्यशील
समाधान	-	उपाय
पोटली	-	गठरी
केंद्रित	-	एकाग्रचित्त
रकम	-	धनराशि

प्रश्न1 कंचे जब जार से निकलकर अप्पू के मन की कल्पना में समा जाते हैं, तब क्या होता है?

उत्तर- अप्पू की कल्पना में जार का आकार आसमान के समान बहुत ऊँचा हो जाता है । वह स्वयं को जार में, कंचो के साथ बिल्कुल अकेला पाता है । वह कंचों को चारों ओर बिखेरता हुआ आनन्द ले रहा है | वहीं कक्षा में जब मास्टर जी ट्रेन के विषय में पढ़ा रहे थे । बॉयलर के विषय में आते ही, 'बॉयलर लोहे का बड़ा पीपा है' वह दुबारा अपनी कल्पना में विलीन हो जाता है कि लोहे के एक बड़े काँच के जार में हरी लकीर वाले सफ़ेद गोल कंचे, बड़े आँवले जैसे उसमें कंचे भरे होंगे जॉर्ज और वो उनसे खेलेंगे और किसी को भी उस खेल में सम्मिलित नहीं करेंगे ।

प्रश्न 2 दुकानदार और ड्राइवर के सामने अप्पू की क्या स्थिति है ? वे दोनों उसको देखकर पहले परेशान होते हैं, फिर हँसते हैं । कारण बताइए।

उत्तर- दुकानदार और ड्राइवर दोनों के आगे अप्पू की स्थिति एक चंचल बालक की है । दुकानदार के आगे अप्पू कंचो की तरफ़ आकर्षित होकर कल्पना में विलीन हो जाता है । इस मनोस्थिति में उसका ज़रा भी ध्यान नहीं रहता कि उससे जार टूट जाएगा, दुकानदार इसी बात से थोड़ा खिन्न होता है | वहीं दूसरी तरफ अप्पू को सड़क के बीचों-बीच से कंचो को उठाते देखकर ड्राइवर को बड़ी असुविधा होती है । उसे हैरानी भी थी कि इसको कंचो की तो परवाह है, पर अपनी जान की नहीं । उसकी इस मनोदशा को देखकर पहले वो परेशान होते हैं, परन्तु जब उसका कंचों के प्रति प्रेम देखते हैं, तो दोनों को हँसी आ जाती है ।

प्रश्न 3 'मास्टर जी रेलगाड़ी के बारे में बता रहे थे तब उनकी आवाज धीमी क्यों हो गई थी ?

उत्तर- वास्तव में मास्टर जी की आवाज धीमी नहीं हुई थी, अप्पू को धीमी लग रही थी, क्योंकि उसका ध्यान कंचों पर ही था | उसके दिलो-दिमाग पर कंचे ही छाए हुए थे | जैसे - जैसे उसका मन कक्षा से हटकर कंचों पर जा रहा था, वैसे - वैसे मास्टर जी आवाज उसे धीमी लगती जा रही थी |

प्रश्न 4 कंचे कैसे थे ? अप्पू को दुकान में रखे कंचे ही आकर्षित करते हैं, अन्य चीजें नहीं | कारण बताइए |

उत्तर - कंचे हरी लकीर वाले बढ़िया सफ़ेद और गोल थे | बड़े आँवले जैसे बहुत खूबसूरत | अप्पू के पिता प्राय: उसे अन्य सारी चीजें लेकर दिया करते थे, लेकिन कंचे नहीं | इसीलिए अप्पू को दुकान में रखे कंचे ही आकर्षित करते हैं |

प्रश्न 5 अप्पू द्वारा पूरे डेढ़ रुपए के कंचे खरीदने पर दुकानदार ने क्या अनुमान लगाया ?

उत्तर - पूरे डेढ़ रुपए के कंचे खरीदने पर दुकानदार ने अनुमान लगाया कि उसके दोस्तों ने पैसे जमा करके अप्पू को कंचे खरीदने के लिए भेजा होगा | वही सभी मित्रों की ओर से कंचे खरीदने आया होगा |

प्रश्न 6 अप्पू के कंचे सड़क पर कैसे बिखर गए ?

उत्तर - दुकानदार से कंचे खरीदने के बाद अप्पू कागज़ की पोटली में रखे कंचों को छाती से चिपकाकर चला आ रहा था | रास्ते में उसे शक हुआ कि सारे कंचों में हरी लकीरे हैं या नहीं | उसने पोटली खोलकर देखने का निश्चय किया | बस्ता नीचे रखकर जैसे ही उसने पोटली खोली, सारे कंचे सड़क पर बिखर गए |